रजिस्ट्री सं० डी एल—33001/98

REGISTERED NO. DL—33001/98

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 15] नई दिल्ली, शनिवार, अप्रैल 11, 1998 (चैत्र 21, 1920)
No. 15] NEW DELHI, SATURDAY, APRIL 11, 1998 (CHAITRA 21, 1920)

(इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके)
(Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation)

विषय-सूची

	पृष्ठ
भाग I—खण्ड 1—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालयों द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों, आदेशों तथा संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं	257
भाग I—खण्ड 2—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के संबंध में अधिसूचनाएं	323
भाग I—खण्ड 3—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए संकल्पों और असांविधिक आदेशों के संबंध में अधिसूचनाएं	1
भाग I—खण्ड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के संबंध में अधिसूचनाएं	498
भाग II—खण्ड 1—अधिनियम, अध्यादेश और विनियम	*
भाग II—खण्ड 1क—अधिनियमों, अध्यादेशों और विनियमों का हिन्दी भाषा में प्राधिकृत पाठ	*
भाग II—खण्ड 2—विधेयक तथा विधेयकों पर प्रवर समितियों के विवरण तथा रिपोर्ट	*
भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (i) भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियम (जिसमें सामान्य स्वरूप के आदेश और उपविधियां आदि भी शामिल हैं)।	*
भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii) भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सांविधिक आदेश और अधिसूचनाएं	*
भाग II—खण्ड 3—उपखण्ड (iii)—भारत सरकार के मंत्रालयों (जिनमें रक्षा मंत्रालय भी शामिल है) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियमों और सांविधिक आदेशों (जिनमें सामान्य स्वरूप की उपविधियां भी शामिल हैं) के हिन्दी प्राधिकृत पाठ (ऐसे पाठों को छोड़कर जो भारत के राजपत्र के खण्ड 3 या खण्ड 4 में प्रकाशित होते हैं)	*
भाग II—खण्ड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए सांविधिक नियम और आदेश	*
भाग III—खण्ड 1—उच्च न्यायालयों, नियंत्रक और महालेखा-परीक्षक, संघ लोक सेवा आयोग, रेल विभाग और भारत सरकार से संबद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों द्वारा जारी की गई अधिसूचना	359
भाग III—खण्ड 2—पेटेंट कार्यालय द्वारा जारी की गई पेटेन्टों और डिजाइनों से संबंधित अधिसूचनाएं और नोटिस	489
भाग III—खण्ड 3—मुख्य आयुक्तों के प्राधिकार के अधीन अथवा द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं	*
भाग III—खण्ड 4—विविध अधिसूचनाएं जिनमें सांविधिक निकायों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं, आदेश, विज्ञापन और नोटिस शामिल हैं।	1047
भाग IV—गैर-सरकारी व्यक्तियों और गैर-सरकारी निकायों द्वारा जारी किए गए विज्ञापन और नोटिस	67
भाग IV—अंग्रेजी और हिन्दी दोनों में जन्म और मृत्यु के आंकड़ों को बताने वाला सम्पूरक	*

*जोड़े प्राप्त नहीं हुए

CONTENTS

PAGE

PART I—SECTION 1—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court 257

PART I—SECTION 2—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court 323

PART I—SECTION 3—Notifications relating to Resolutions and Non-Statutory Orders issued by the Ministry of Defence 1

PART I—SECTION 4—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministry of Defence 495

PART II—SECTION 1—Acts, Ordinances and Regulations . . . . . *

PART II—SECTION 1-A—Authoritative texts in Hindi Language of Acts, Ordinances and Regulations . . . . . *

PART II—SECTION 2—Bills and Reports of the Select Committee on Bills . . . . .

PART II—SECTION 2—SUB-SECTION (i)—General Statutory Rules (including Orders, Bye-laws, etc. of general character) issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administration of Union Territories)

PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (ii)—Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administration of Union Territories)

PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (iii)—Authoritative texts in Hindi (other than such texts, published in Section 3 of Section 4 of the Gazette of India) of General Statutory Rules & Statutory Orders (including Bye-laws of a general character) issued by the Ministries of the Government of India (including the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than Administration of Union Territorie) . *

PART II—SECTION 4—Statutory Rules and Orders issued by the Ministry of Defence . *

PART III—SECTION 1—Notifications issued by the High Courts, the Comproller and Auditor General, Union Public Service Commission, the Indian Government Railways and by Attached and Subordinate Offices of the Government of India . 359

PART III—SECTION 2—Notifications and Notices issued by the Patent Office, relating to Patents and Designs 489

PART III—SECTION 3—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners . . . . . *

PART III—SECTION 4—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies 1047

PART IV—Advertisements and Notices issued by private Individuals and private Bodies . 67

PART V—Supplement showing Statistics of Births and Deaths etc., both in English and Hindi *

*Folios not received

भाग I—खण्ड 1

[PART I—SECTION 1]

(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं

[Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court]

राष्ट्रपति सचिवालय

नई दिल्ली, दिनांक 27 मार्च 1998

सं. 33-प्रेज/98—दिनांक 15 जून, 1996 के भारत के राजपत्र के भाग 1 खण्ड 1 में प्रकाशित राष्ट्रपति सचिवालय की अधिसूचना सं. 74-प्रेज/96, दिनांक 20 मई, 1996 में श्री दिनेश कुमार, कांस्टेबल, दिल्ली पुलिस, दिल्ली को वीरता के लिए प्रदत्त पुलिस पदक को पुलिस पदक से संबंधित नियमों के नियम 8 के अंतर्गत रद्द किया जाता है और पदक जब्त किया जाता है।

एम. के. शरीफ
राष्ट्रपति का संयुक्त सचिव

नई दिल्ली, दिनांक 30 मार्च 1998

सं. 66-प्रेज/98—राष्ट्रपति, निम्नलिखित व्यक्तियों को "सर्वोत्तम जीवन रक्षा पदक" प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं :—

(मरणोपरान्त)

1. श्रीमती सम्मान्नी प्रामीला,
गांव दोड्डीजनमपेट,
शादनगर मण्डल,
जिला महबूबनगर,
आन्ध्र प्रदेश।

श्रीमती सम्मान्नी प्रामीला अपने तीसरे प्रसव के लिए गोकीबाली गांव में अपने माता-पिता के यहां आई हुई थी। प्रसव के कुछ माह बाद, 5-1-1997 को लगभग दोपहर के समय वह अपनी भाभी के साथ कपड़े धोने के लिए गांव के तालाब, "बरोला कुन्टा" पर गई। श्रीमती करीमा बेगम भी अपनी पुत्री कु. शहनाज (14 वर्ष) तथा पुत्र मास्टर मो. यूसुफ (9 वर्ष) के साथ कपड़े धोने के लिए उस तालाब पर आई। इसी बीच तीन और बच्चे, अर्थात् सलाउद्दीन (12 वर्ष), मो. रसाक (12 वर्ष) तथा अनवर पाशा (13 वर्ष) भी तालाब पर आए और वे सभी मो. यूसुफ के साथ तैरने के लिए तालाब में उतर गए। चूंकि वे तैरना नहीं जानते थे इसलिए वे गहरे पानी में डूबने लगे। यह देखकर श्रीमती करीमा बेगम ने मदद के लिए चीख-पुकार की। उनकी चीख-पुकार सुनकर श्रीमती प्रामीला जो अपने छः माह के बच्चे को दूध पिला रही थीं बच्चे को वहीं छोड़ मदद के लिए घटना स्थल पर दौड़ी आई और अपने प्रथम प्रयास में एक बच्चे अर्थात् मास्टर अनवर पाशा को सुरक्षित बचा लाने में सफल हुई। दूसरे बच्चों को बचाने के लिए वह फिर से तालाब में कूद गई। परन्तु दहशत के मारे उन सभी ने उनको इस प्रकार से जकड़ लिया कि वह अपना नियंत्रण खो बैठीं और डूब गई। तत्पश्चात्, श्रीमती प्रामीला तथा चार बच्चों के शव तालाब से निकाले गए।

2. श्रीमती सम्मान्नी प्रामीला ने एक बच्चे की जान बचाने में अदम्य साहस एवं तत्परता का परिचय दिया और तालाब में अपने जीवन के लिए संघर्ष कर रहे अन्य चार बच्चों को बचाने के प्रयास में अपने जीवन का सर्वोच्च बलिदान दे दिया।

(मरणोपरान्त)

2. श्री एतवा ओरांव उर्फ एतवा खालखो,
गांव एवं डा. बुड्हा खुखरा,
थाना मन्डार,
जिला रांची,
बिहार।

26 जून, 1994 मन्डार में बाजार का दिन था। सारे स्थान पर बाजार से लौटने वाले लोगों की भीड़ लगी हुई थी। यकायक कोयल नदी में पानी का स्तर बढ़ गया और पानी तेज गति से पुल के ऊपर से होकर बहने लगा। श्री एतवा ओरांव ने, जो होली फैमिली हास्पिटल, मन्डार में चपरासी थे, बाढ़ग्रस्त कोयल नदी को पार करने में अनेक लोगों की मदद की। उन्होंने नदी में डूबने से सात लोगों की जान बचाई। आठवें व्यक्ति की जान बचाने का प्रयास करते समय वह स्वयं पानी के प्रवाह में बह निकले और परिणामस्वरूप उनकी मृत्यु हो गई। बाद में 30-6-1994 को गांव "लेवाजाड" के पास उनकी सड़ी-गली लाश मिली।

2. श्री एतवा ओरांव उर्फ एतवा खालखो ने बाढ़ग्रस्त नदी को पार करने में ग्रामवासियों की मदद करके और सात व्यक्तियों को डूबने से जान बचाने में करुणा, साहस तथा तत्परता का परिचय दिया। इस प्रकार एक और व्यक्ति की जान बचाने का प्रयास करते हुए उन्होंने अपने जीवन का सर्वोच्च बलिदान दे दिया।

(मरणोपरान्त)

3. कु. सैफाली चौधरी,
(पायलट आफीसर)
गांव व डा. लोढणा गोटनी,
तहसील खुर्जा,
जिला बुलन्दशहर,
उत्तर प्रदेश ।

तेजपुर (असम) में 115 एच यू ए एफ में तैनात एयर फोर्स पायलेट, पायलेट आफिसर, सैफाली चौधरी 24 मार्च, 1996 को इस यूनिट के तीन अधिकारियों तथा उनके परिवारजनों के साथ एयर फोर्स स्टेशन से 25 कि. मी. दूरभराली नदी पर, जो कि संयोगवश इस स्टेशन पर तैनात एयर फोर्स कार्मिक के लिए एक मनपसंद स्थल है, पिकनिक स्थल है, पिकनिक मनाने गए । जिस स्थान पर वे खेल रहे थे वहां लगभग घुटनों तक गहरा पानी था । सभी उनमें से एक अधिकारी अचानक फिसल गया । यह देखकर उनमें से एक अन्य अधिकारी की पत्नी उनके बचाव के लिए आगे आई, लेकिन वह भी नदी की धारा में बह निकली । पायलेट आफिसर सैफाली चौधरी के साथ खड़े अधिकारी ने उनसे मदद के लिए आने का अनुरोध किया तथा धारा में बही जा रही पत्नी तथा अपने साथी अधिकारी दोनों को बाहर खींच निकालने के लिए आगे आया इसी बीच, पायलेट आफीसर सैफाली चौधरी ने अपनी सुरक्षा के बारे में एक क्षण भी सोच-विचार किए बिना दूसरी तरफ से कवर करने के लिए पानी में छलांग लगा दी । अपनी पत्नी तथा दूसरे अधिकारी को बचाने के बाद, अधिकारी ने यह देखा कि पायलेट आफीसर सैफाली चौधरी नदी के प्रवाह में बह चली थीं । इससे पहले कि उन्हें बचा लिया जाता बहुत देर हो गई थी और उन्हें मृत घोषित कर दिया गया ।

2. पायलेट आफीसर सैफाली चौधरी ने अपने एक साथी अधिकारी तथा एक महिला की जान बचाने में निःस्वार्थ तथा वीरतापूर्ण प्रयास करते हुए उत्कृष्ट साहस का परिचय दिया और अपने जीवन का सर्वोच्च बलिदान दे दिया ।

4. जी एस-174077 ए ओवरसीयर सैयद मोहम्मद जाकी
मस्जिद दरोगा महबूबजान, (मरणोपरान्त)
जिला रामपुर,
उत्तर प्रदेश ।

पुष्पक परियोजना के अंतर्गत 405 सड़क अनुरक्षण प्लाटून के जी एस-174077ए ओवरसीयर सैयद मोहम्मद जाकी मिजोरम राज्य में निर्माणाधीन कालकुल-सिम्बना सड़क पर तैनात थे । 10 सितम्बर, 1996 को लगभग 11.00 बजे जब वे अधीक्षक बी/आर ग्रेड-2, डी एम भल्ला के साथ सड़क पर 101.50 कि. मी. पर पत्थर संग्रहण के कार्य का पर्यवेक्षण कर रहे थे तभी उन्होंने देखा कि खदान के ऊपर से एक शिलाखंड नीचे आ रहा है । उस स्थान पर 15 दिहाड़ी मजदूर काम कर रहे थे । इन 15 दिहाड़ी मजदूरों की जान को खतरे की आशंका से ओवरसियर सैयद मोहम्मद जाकी ने उनका ध्यान आकृष्ट करने के लिए शोर मचाया तथा उन्हें गिरते हुए शिलाखंड के रास्ते से हट जाने को कहा । उनकी आवाज सुनकर दो को छोड़कर बाकी सभी मजदूर उनकी ओर दौड़े आए । ये दो मजदूर जो थोड़ी दूरी पर थे, उनकी चेतावनी को सुन नहीं सके । यह सोचकर कि इन दो कार्मिकों की जान बचाने की दूसरी कोई संभावना नहीं है, वह उनकी ओर दौड़ पड़े तथा उस शिलाखंड के रास्ते से उन्हें परे धकेल दिया ऐसा करते हुए शिलाखंड ओवरसियर सैयद मोहम्मद जाकी को आ लगा और वह घाटी में जा गिरे । इससे उन्हें गंभीर चोट आई । एक मजदूर, माधू हेम्ब्रम को भी चोटें आईं । उन दोनों को निकालकर तत्काल सिविल अस्पताल नगोपा ले जाया गया । ओवरसियर सैयद मोहम्मद जाकी, जो कि होश में थे, अस्पताल जाते-जाते उन मजदूरों की कुशल-क्षेम पूछते रहे । चोटें लगने के कारण उनकी मौत हो गई । अपनी मौत से ठीक पहले भी उन्होंने इस बात पर संतोष व्यक्त किया कि सभी दिहाड़ी मजदूर सुरक्षित हैं ।

2. इस प्रकार, जी एस-174077ए ओवरसियर सैयद मोहम्मद जाकी ने अदम्य साहस, बहादुरी, जिम्मेदारी तथा दायित्व की उच्च भावना का परिचय दिया और शिलाखंड से चोट लगने से 15 मजदूरों की जान बचाई । इस प्रक्रिया में उन्होंने अपने जीवन का बलिदान दे दिया ।

एस. के. शरीफ
राष्ट्रपति के संयुक्त सचिव

सं. 67-प्रेज/98—राष्ट्रपति, निम्नलिखित व्यक्तियों को "उत्तम जीवन रक्षा पदक" प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं :—

1. श्रीमती सुनन्दा,
पत्नी श्री तीरथप्पा,
मन्डारथी गांव,
उडुपी तालुक,
जिला उडुपी,
कर्नाटक ।

14-2-1997 को जब सभी कुली (मजदूर), जिनमें स्त्रियां भी शामिल थीं । काम करने के लिए श्री रंगनाथ की काफी इस्टेट में गए हुए थे तो ताड़ के पत्तों से बने झोंपड़ों में जहां वे रह रहे थे, अचानक आग लग गई । कुलियों (मजदूरों) के 1 से 10 वर्ष के बीच की आयु के 22 बच्चे, जो उन झोंपड़ों में रह गए थे, झोंपड़ों में ही फंस रह गए और रोने-चिल्लाने लगे ।

2. बच्चों की चीख-पुकार सुन कर श्रीमती सुनन्दा, जो घटना स्थल से लगभग 100 गज की दूरी पर ही काम कर रही थीं, वहां दौड़ी आईं । हिम्मत करके उन झोंपड़ों के अंदर घुस गईं । उन्होंने देखा कि आग पास के टाइलों से बने मकान में फैल चुकी थी और दो बच्चे (10 वर्ष की गीता और 6 वर्ष की सविता) पहले ही अपनी जान गवां चुके थे । 22 बच्चे जलती

हुई झोपड़ियों में फंसे हुए थे। वह बच्चों को झोपड़ों तथा टाइल के मकानों से बाहर निकाल लाने में सफल हुई और इस प्रकार उन्होंने अपनी जान को गंभीर जोखिम में डालकर उन बच्चों की जानें बचा लीं। दो बच्चों की दुर्भाग्यपूर्ण मौत के अलावा, 57 मजदूरों की लगभग 40,000/- रुपए की सम्पत्ति आग में नष्ट हो गई।

3. श्रीमती सुनन्दा ने अपनी जान के जोखिम की परवाह न करते हुए आग की दुर्घटना में 22 बच्चों की जान बचाने में साहस और तत्परता का परिचय दिया।

2. श्री आर. टी. प्रभाकर, (मरणोपरान्त)
पुत्र श्री टी. रामप्पा,
टुबीनक्टी गांव,
हरिहर तालुक,
जिला चित्रदुर्ग,
कर्नाटक।

18-9-1996 को लगभग शाम को 5.30 बजे उच्चंगी गांव के नवोदय विद्यालय के विद्यार्थी और अध्यापक भगवान गणेश की मूर्ति को पास के तालाब में विसर्जन के लिए ले गए। तालाब लगभग 1000 मीटर लंबा और 660 मीटर चौड़ा है और पानी की गहराई 10 फीट थी। विद्यार्थी मूर्ति को विसर्जन के लिए तालाब में लगभग 50 फीट की दूरी तक ले गए। अचानक 13 विद्यार्थी फिसल गए और तालाब में गिर गए। यह देखकर एक विद्यार्थी श्री आर. टी. प्रभाकर ने अपनी जान के जोखिम की परवाह न करते हुए फौरन तालाब में छलांग लगा दी और एक-एक करके चार विद्यार्थियों को खींच कर तालाब के किनारे पर ले आए। पांचवें विद्यार्थी को बचाने की कोशिश में, श्री आर. टी. प्रभाकर स्वयं तालाब में गिर गए और अपनी जान गंवा दी।

2. श्री आर. टी. प्रभाकर ने 4 विद्यार्थियों की जान बचाने में साहस और सूझ-बूझ का परिचय दिया और बाद में एक और विद्यार्थी की जान बचाने की कोशिश में अपने जीवन का सर्वोच्च बलिदान दे दिया।

(मरणोपरान्त)

3. श्री सुदामन डेविड,
मलाल मणाकुझी,
डाकघर तिरुमूझ,
जिला एर्नाकुलम,
केरल।

23-8-1995 को राउरकेला स्टील प्लांट के एक सेवानिवृत्त इंजीनियर, श्री सुदामन डेविड, झारसुगुडा-हावड़ा इस्पात एक्सप्रेस में राउरकेला से कलकत्ता की ओर जा रहे थे। रात को लगभग 8.15 बजे घातक हथियारों से लैस कुछ डाकू डकैती के लिए कम्पार्टमेंट में घुस आए। श्री डेविड ने अपनी जान के जोखिम की परवाह किए बिना अकेले ही डाकुओं से मुकाबला किया और दो को धक्का देकर कम्पार्टमेंट से बाहर फेंकने में कामयाब हो गए पर उनमें से एक डाकू ने चाकू से उन पर वार कर दिया जिससे उनकी तत्काल मृत्यु हो गई। इसके पश्चात 7 डाकुओं को गिरफ्तार कर लिया गया और खड़गपुर राजकीय रेलवे पुलिस स्टेशन द्वारा 24-8-95 को भारतीय दण्ड संहिता की धारा 396 और शस्त्र अधिनियम की धारा 25/27 के तहत एक मामला दर्ज किया गया। इस प्रकार श्री सुदामन डेविड ने अन्य कई यात्रियों की जान और संपत्ति की रक्षा की और ऐसा करते हुए अपने जीवन का सर्वोच्च बलिदान दे दिया।

2. श्री सुदामन डेविड ने डाकुओं से यात्रियों की जान और संपत्ति की रक्षा करने में अदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया और इस प्रक्रिया में दुर्भाग्यवश अपनी जान गंवा दी।

4. जी.एस-163069 एन. अधीक्षक,
बी./आर. ग्रेड-2 उधम सिंह,
गांव अतुज,
पो. आफिस, बिचपुरी, जिला आगरा,
उत्तर प्रदेश।

359 सड़क अनुरक्षण प्लाटून के जी. एस. 163069एन. अधीक्षक बी./आर. ग्रेड-2 उधम सिंह विश्व में मोटर योग्य सबसे ऊंची सड़क लेह-खरदुन्गला-खालसार सड़क पर जो 14800 से 18380 फुट के बीच की ऊंचाई पर स्थित है, बर्फ को हटाने के कार्यदल के प्रभारी थे यह सड़क सीमाओं की रक्षा के लिए सियाचिन ग्लेशियर, कराकोरम पास और शाइआक घाटी में तैनात भारतीय सैनिक टुकड़ियों के लिए एकमात्र जीवन रेखा है। 26 मई, 96 को जी. एस. 163069एन. अधीक्षक बी./आर. ग्रेड।। उधम सिंह ने एक इन्फेन्ट्री बटालियन को बेस कैम्प ले जा रहे एक काफिले को गुजरने देने के लिए देर रात 0130 बजे तक काम किया था। अगले दिन मौसम का हाल बहुत खराब था, तापमान शून्य से नीचे था और हवा 80 कि.मी./घंटा की रफ्तार से चल रही थी। खराब मौसम की परवाह न करते हुए उन्होंने सुबह 0500 बजे से बर्फ हटाने का कार्य शुरू कर दिया। 1000 बजे बर्फ का एक बड़ा पहाड़ खरदुंगला शिखर के पास से लुढ़का और एक डो80-ए12 डोजर व उसके आपरेटर जी.एस.-165506 ओ.इ.एम. पी. विजयन और दो सहायकों, केदार मौर्या और श्रीराम को अपनी चपेट में ले लिया। डोजर और तीन व्यक्ति घाटी में 200 फुट नीचे बर्फ के नीचे दब गए लम्बे आपरेशन के कारण पूरी तरह थके होने के बावजूद, श्री उधम सिंह अपने चार अधीनस्थ कर्मचारियों/मजदूरों सहित बर्फ के पहाड़ की ओर दौड़े आए। उन्होंने अपनी जान की परवाह न करते हुए बहुत ही खतरनाक मौसम में नेतृत्व का अपना उदाहरण पेश करते हुए उन्हें बचाव कार्य के लिए प्रेरित किया और बर्फ के पहाड़ों के गिरने के खतरे की परवाह किए बिना, वे नीचे घाटी में उतर गए, बर्फ को खोदकर हटाया, तीनों व्यक्तियों को वहां से निकालकर उन्हें लेह अस्पताल में पहुंचाने का कार्य किया। दुर्भाग्यवश, ओ.इ.एम. विजयन की अस्पताल जाते समय मौत हो गई। चारों अधीनस्थ कर्मचारियों/मजदूरों ने केवल सहायकों की भूमिका निभाई।

2. इस प्रकार सी.एस.-163069एल अधीक्षक बी./आर. ग्रेड 2 श्री उधम सिंह ने अत्यधिक खतरे और प्रतिकूल मौसम की परवाह न करते हुए अदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया और तीन व्यक्तियों की जान बचायी।

5. मास्टर विजय कुमार उर्फ बिकाऊ (मरणोपरान्त)
सुपुत्र श्री शुकन महतो,
ग्राम सिमरीगोट,
थाना राजनगर,
जिला मधुबनी,
बिहार।

21 जनवरी, 1997 को सुबह 10.45 बजे जब श्री अमिताभ शुक्ल काम पर चले गए थे तभी उनके नानक पुरा (नई दिल्ली) स्थित आवास पर पार्सल देने के बहाने तीन सशस्त्र बदमाशों ने घर में प्रवेश किया। ज्यों ही उनकी पत्नी पार्सल को लेने के लिए आयीं तो उन पर चाकुओं से कई वार कर दिए। उनमें से एक बदमाश ने उनके चार वर्षीय पुत्र मास्टर मिहिर पर हमला करने का प्रयास किया। यह देखकर उनका घरेलू नौकर मास्टर विजय कुमार उसे बचाने के लिए आगे आ गया। हालांकि बदमाशों ने मास्टर विजय कुमार पर चाकू से निर्दयतापूर्वक वार किया और उसे कई गंभीर घाव आए जो भी उसने बदमाशों को मास्टर मिहिर को हाथ तक लगाने का मौका नहीं दिया। श्रीमती शुक्ल और मास्टर विजय को गंभीर रूप से घायल करके बदमाश वहां से भाग निकले। जबकि श्रीमती शुक्ल सहायता पाने के लिए घिसटते हुए सामने के द्वार तक आईं, मास्टर विजय मास्टर मिहिर को लेकर पीछे के दरवाजे की तरफ भागा। थोड़ी दूर जाकर वह गिर पड़ा।

2. बाद में दोनों को अस्पताल पहुंचाया गया। जबकि श्रीमती शुक्ल की जान तो बच गयी, मास्टर विजय कुमार की उसी शाम को चोटों के परिणामस्वरूप मौत हो गई।

3. मास्टर विजय कुमार ने हमले के एक मामले में एक बच्चे की जान बचाने में अदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया और ऐसा करते हुए अपने जीवन का सर्वोच्च बलिदान दे दिया।

6. कुमारी पिंकी, (मरणोपरान्त)
पुत्री श्री होशियार सिंह,
ग्राम अदालपुर, डाकघर अकोदा,
जिला महेन्द्रगढ़,
हरियाणा।

26 सितम्बर, 1996 को कुमारी पिंकी स्कूल वैन में लगभग 40 अन्य बच्चों के साथ स्कूल से लौट रही थी। बैटरी के पास रखे एक पैट्रोल केन से कुछ पैट्रोल बैटरी पर बिखर गया जिस पर यात्रियों का ध्यान नहीं गया था। कुछ ही क्षणों में वैन में आग लग गयी। जबकि 6 बच्चों की वहीं मौत हो गई, 13 बच्चे गंभीर रूप से घायल हो गए। कुमारी पिंकी 5 बच्चों को वैन से बाहर धकेलकर उनकी जान बचाने में सफल हुई। ऐसा करते हुए उसने अपनी जान गंवा दी।

2. कुमारी पिंकी ने आग की दुर्घटना से पांच बच्चों की जान बचाने में अदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया और इस प्रक्रिया में अपने जीवन का सर्वोच्च बलिदान दे दिया।

एस. के. शरीफ
राष्ट्रपति के संयुक्त सचिव

सं. 68-प्रेज/98—राष्ट्रपति निम्नलिखित व्यक्तियों को "जीवन रक्षा पदक" प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं :—

1. श्री चलासानी प्रभुकुमार चौधरी,
द्वारा चलासानी कोटेश्वर राव,
एम. आई. जी.-92, आटो नगर,
विशाखापट्टनम,
आंध्र प्रदेश।

2. श्री तनकाला सूर्यनारायणन,
चिन्नावरोपेट, उरजाम पोस्ट,
नरसन्नापेट मण्डल,
जिला श्रीकाकुलम,
आन्ध्र प्रदेश।

25-08-96 को लगभग प्रातः 6.10 बजे भारी बाढ़ के कारण आंध्र प्रदेश राज्य सड़क परिवहन निगम की एक बस गुन्टूर जिले में वेमावरम (वी) के निकट एक स्थानीय नदी में गिर पड़ी। बस में चालक दल के 3 सदस्यों सहित 47 व्यक्ति थे। दुर्घटना के समय नदी में लगभग 8 फुट गहरा पानी था। पानी की तेज धारा बस को लगभग 3 से 5 फुट की दूरी तक बहाकर ले गई। सभी यात्री बस के अन्दर ही फंसे रह गए और उनके डूबकर मर जाने का खतरा था। यह देखकर पास खड़े एक तेल टैंकर के चालक श्री चलासानी प्रभुकुमार चौधरी तथा क्लीनर श्री तनकाला सूर्यनारायणन पानी में कूद गए तथा अपनी जान को जोखिम में डालकर उस स्थान तक गए और बचाव कार्य शुरू कर दिया। उन्होंने बस की खिड़कियां तोड़कर खोल डालीं तथा बस में फंसे हुए 25 यात्रियों को बाहर निकाल लिया। 13 व्यक्तियों को नहीं बचाया जा सका और उनकी मौत हो गई।

2. सर्वश्री चलासानी प्रभकुमार चौधरी तथा तनकाला सूर्यनारायणन ने पानी में डूबने से 25 यात्रियों को जान बचाने में साहस एवं तत्परता का परिचय दिया।

3. श्री सेट्टी मोलमन,
सुपुत्र श्री सुब्बा राव,
गांव डोकीपारु,
मेडीकोन्डूर मण्डल,
जिला गुन्टूर,
आंध्र प्रदेश।

25-08-96 को लगभग प्रातः 6-10 बजे भारी बाढ़ के कारण आंध्र प्रदेश राज्य सड़क परिवहन निगम की एक बस गुन्टूर जिले में वेमावरम (वी) के निकट एक स्थानीय नदी में गिर

पड़ी। बस में बालक के 3 सदस्यों सहित 47 व्यक्ति थे। दुर्घटना के समय नदी में लगभग 8 फुट गहरा पानी था। पानी की तेज धारा बस को लगभग 3 से 5 फुट की दूरी तक बहा ले गई। सभी यात्री बस के अन्दर ही फंसे रह गए और उनके डूबकर मर जाने का खतरा था। यह देखकर श्री संट्टी सोलमन जिन्होंने लारी में से एक रस्सी निकलती देखी, तैरकर उस स्थान तक गए तथा अपनी जान को जोखिम में डालकर बचाव कार्य में जुट गए। रस्सी का एक सिरा बस से बांध दिया तथा दूसरा सिरा लारी से। बचा लिए गए कुल 34 व्यक्तियों में से रस्सी की सहायता से 4 बच्चों तथा 5 महिलाओं को सुरक्षित बचा लाने में सफल हुए। दुर्भाग्यवश शेष 13 व्यक्तियों की मौत हो गई।

2. श्री संट्टी सोलमन ने पानी में डूबने से 9 यात्रियों की जान बचाने में साहस एवं तत्परता का परिचय दिया।

4. श्री अजीत कुमार झा,
गांव बुद्धनगर राघे,
डाकखाना मुशाहरी,
जिला मुज्जफरपुर,
बिहार।

3-1-1994 को सुबह 6.30 बजे 120 व्यक्तियों को ले जा रही एक नाव जिला मुजफ्फरपुर के मुशाहरी ब्लाक में गांव बुद्धनगर राघे के निकट बूढी गंडक नदी में उलट गई। नाव में सवार सभी यात्री नदी में जा गिरे। यह देखकर श्री अजीत कुमार झा, जो अपनी ही नाव चला रहे थे, नदी में कूद पड़े तथा अपनी जान को जोखिम में डालकर अमृतराम, हफीज मियां और बिन्दु कुमारी नामक 3 व्यक्तियों को सुरक्षित बचा लिया। शेष नौ व्यक्तियों को नहीं बचाया जा सका तथा डूबने से उनकी मौत हो गई।

2. श्री अजीत कुमार झा ने अपनी जान को गंभीर खतरे की परवाह न करते हुए तीन व्यक्तियों की जान डूबने से बचाने में साहस और तत्परता का परिचय दिया।

5. श्री अरविन्द बेदी,
गांव श्रोहाली कोठी,
डाकघर पपरोला, तहसील बैजनाथ,
जिला कांगड़ा,
हिमाचल प्रदेश।

8-9-1997 को सिलसिलाए वस्त्रों के खुदरा व्यापारी श्री कार्तिक, जिनकी उम्र 24 वर्ष थी तथा जो मध्य प्रदेश के निवासी थे और 10 वर्ष से पपरोला में रह रहे थे श्रोहाली कोठी में 12-13 फुट गहरे एक खड्ड में कपड़े धोने गए। खड्ड के जल स्तर में अचानक वृद्धि हो जाने के कारण वे उसमें फिसल गए तथा जलधारा में बह गए। पास के ही एक स्कूल के छात्रों द्वारा चीखपुकार करने पर स्पोर्टस हॉस्टल, पपरोला में अभ्यासरत श्री अरविन्द बेदी घटनास्थल पर दौड़े आए। उस व्यक्ति को डूबते हुए देखकर वह अपनी जान के खतरे की परवाह न करते हुए नदी में कूद गए। उन्होंने कुछ दूरी पर जाकर कार्तिक को पकड़ लिया और उसे बेहोशी की हालत में बाहर निकाल लाए तथा इलाज के लिए तत्काल सरकारी अस्पताल में भर्ती करा दिया। इस प्रकार उन्होंने उसकी जान बचायी।

2. श्री अरविन्द बेदी ने अपनी जान को जोखिम की परवाह न करते हुए श्री कार्तिक को जान डूबने से बचाने में सूझ बूझ तथा साहस का परिचय दिया।

6. श्री गिरधारी लाल,
गांव पंजेहर,
तहसील जयसिंहपुर,
जिला कांगड़ा,
हिमाचल प्रदेश।

7. श्री कल्याण सिंह,
गांव पंजेहर,
तहसील जयसिंहपुर,
जिला कांगड़ा,
हिमाचल प्रदेश।

8. श्री प्रवीण सिंह,
गांव पंजेहर,
तहसील जयसिंहपुर,
जिला कांगड़ा,
हिमाचल प्रदेश।

7-3-1997 को महाशिव रात्रि के दिन महिलाओं एवं बच्चों सहित 20-25 यात्री एक नाव में कुंजेश्वर मंदिर जा रहे थे। दुर्भाग्यवश नदी के बीचों-बीच नाव उलट गई जहां पानी लगभग 30 फुट गहरा था। उनकी चीखपुकार सुनकर नदी में नहा रहे श्री प्रवीण सिंह, श्री कल्याण सिंह तथा श्री गिरधारी लाल तत्काल ही घटनास्थल पर पहुंचे। उन्होंने अपनी जान के जोखिम की परवाह किए बिना नदी में छलांग लगा दी तथा 7 से 12 वर्ष तक की आयु के 5-6 बच्चों सहित 20-25 व्यक्तियों की जान बचा ली।

2. सर्वश्री गिरधारी लाल, कल्याण सिंह तथा प्रवीण सिंह की सूझबूझ तथा साहसिक कार्य ने 20-25 व्यक्तियों को डूबने से जान बचा ली।

9. श्री इन्द्र सिंह धलवालिया,
सुपुत्र श्री कांशी राम,
गांव कल्लार,
डाकघर भदरोली कलां, तहसील घुमारवीं,
जिला बिलासपुर,
हिमाचल प्रदेश।

24-4-1997 को मास्टर अनिल कुमार, जो अपने माता-पिता के साथ नवां शहर, पंजाब से सैर-सपाटे के लिए आया हुआ था, एक गड्ढे (सरयाली गड्डा) में गिर पड़ा और डूबने लगा। कुछ व्यक्तियों की चीख-चिल्लाहट सुनकर दोपहर 2.30 बजे स्कूल से लौट रहे राजकीय माध्यमिक विद्यालय बरान के अध्यापक श्री इन्द्र सिंह अपनी जान को जोखिम की परवाह किए बिना 15-20 फुट की ऊंचाई से गड्ढे में कूद गए तथा डूबते हुए बच्चे

को बेहोशी की हालत में बाहर निकाल लाए और उसे अस्पताल ले गए । उस गड्ढे की चौड़ाई 58 फुट है तथा इस घटना के समय उसमें पानी 13 फुट गहरा था । यह घटना एक पुल के निकट घटी जहां पानी का प्रवाह बहुत तेज था ।

2. श्री इन्द्र सिंह ने अपनी जान के जोखिम की परवाह किए बिना अपनी सूझबूझ तथा साहसिक कार्य से एक बच्चे की डूबने से जान बचा ली ।

10. श्री मेहर चन्द ठाकुर,
गांव व डाकघर वशिष्ठ कोठी,
जगत सुख, जिला कुल्लू,
हिमाचल प्रदेश ।

5-9-1995 को कुछ थल सेना कार्मिक तथा उनके परिवारजन व्यास नदी में आई बाढ़ के कारण पानी से पूरी तरह घिरे हुए एस.ए.एस.इ. परिसर में फंस गए थे । थल सेना कार्मिकों तथा उनके परिवारजनों के लिए उस परिसर से बाहर निकल आना संभव नहीं था। क्योंकि बाढ़ के पानी से सभी निकास मार्ग अवरूद्ध हो गए थे । गांव के कुछ युवकों द्वारा यह सूचित किए जाने पर कि कुछ थल सेना कार्मिक एस.ए.एस.इ. परिसर में फंस गए हैं, श्री मेहर चंद ठाकुर ने जो निकटवर्ती वशिष्ठ गांव के निवासी हैं और जो बचाव कार्य में प्रशिक्षित हैं, बचाव सामग्री एकत्र की और घटनास्थल पर दौड़े आए । चार मंजिला इमारत से मदद के लिए चीखपुकार कर रहे वहां फंसे व्यक्तियों को देखकर उन्होंने रस्सा फेंका तथा उनसे इसे पास के पेड़ से बांधने को कहा और उसके बाद वे अकेले ही एक-एक करके उन्हें नदी के किनारे पर ले आए ।

2. श्री मेहर चंद ठाकुर ने अपनी जान को गंभीर जोखिम की परवाह किए बिना लगभग 150 कार्मिकों तथा उनके परिवारजनों की जान बचाने में साहस और तत्परता का परिचय दिया ।

11. श्री एन. एल. अंगदी,
पुत्र श्री लोकाजी अंगदी (शिक्षक),
हिलानली,
टांडा, तालुक सिंदगी,
जिला बीजापुर,
कर्नाटक ।

19-7-1996 को लगभग सुबह 10.00 बजे कुमारी फातिमा (9 वर्ष) हामल कालोनी में अपने घर के पास सड़क के किनारे पर बने एक कुंए से पानी खींचते समय दुर्घटनावश कुएं में गिर पड़ी । 15 फुट गहरे तथा 15 फुट चौड़े उस कुएं पर बचाव के लिए पर्याप्त फेंसिंग भी नहीं थी । दुर्घटना के समय कुएं में पानी लगभग 10 फुट गहरा था । उसकी चीखपुकार सुनकर श्री एन. एल. अंगदी जो जगदम्बा कन्नड़ बायज हायर प्राईमरी स्कूल के हेडमास्टर थे और जो स्कूल जा रहे थे, उस ओर दौड़े और कुएं में छलांग लगा दी तथा लड़की को सुरक्षित बचा ले आए । श्री अंगदी ने, जिनका हाल ही में अपेंडिसाइटिस का आपरेशन हुआ था, अपना स्वास्थ्य अच्छा न होने के बावजूद बिना हिचकिचाहट के जीवन रक्षक कार्य किया ।

2. श्री एन. एल. अंगदी ने अपनी जान के जोखिम की परवाह किए बिना एक लड़की की जान बचाने में साहस और तत्परता का परिचय दिया ।

12. मास्टर नागप्पा,
पुत्र मजुंनथप्पा,
निवासी डी.एन. डोडी, लक्कूर हुबली,
मलूर तालुक, जिला कोलार,
कर्नाटक ।

20-12-1996 को कोल्लार जिले की 26 वर्षीय कोई श्रीमती गुरम्मा पास के कुंए से पानी लाते समय फिसल गई और कुएं में जा गिरी । जब वह कुएं में डूबने ही वाली थी तभी एक 12 वर्षीय लड़के, नागाप्पा सुपुत्र मंजुनप्पा ने जिसने इस घटना को देखा था, उसे बचाने के लिए कुएं में छलांग लगा दी । कुएं की लम्बाई 44 फुट, चौड़ाई 26 फुट तथा गहराई 15 फुट थी तथा दुर्घटना के समय उसमें 13 फुट गहरा पानी था । उस कुएं पर कोई दीवार नहीं बनी थी । नागाप्पा तैरकर श्रीमती गुरम्मा को उसके बालों को पकड़ कर कुएं से बाहर निकालने में सफल हुआ । उसके बाद उसने फौरन उसके पति को भी सूचित किया जो उसे इलाज के लिए अस्पताल ले गया ।

2. अपनी जान को जोखिम में डालकर मास्टर नागप्पा ने श्रीमती गुरम्मा की जान बचाने में साहस और तत्परता का परिचय दिया

13. श्री अरूण थामस,
मकान सं. 111/जे-3, गोविन्द नगर,
कैरास्को वाडो
लुइस इंडस्ट्रीयल एस्टेट,
डाकघर—मापुसा, बारदेज,
गोवा ।

4-5-97 को लगभग दोपहर 1.30 बजे बेलियाबाग में सैंट माइकल्स चर्च में आयोजित फर्स्ट होली कम्यून समारोह में भाग लेने के बाद एक श्री अरूण थामस अपने माता/पिता संबंधियों व अन्य लोगों के साथ एक निजी नाव "धनलक्ष्मी" में वापस लौट रहे थे । जब नाव मोजुसचोरी जेट्टी के पास पहुंची तो मास्टर आदर्श (4 वर्ष) अचानक नदी में गिर पड़ा । इस दुर्भाग्यपूर्ण घटना से नाव में सवार सभी लोग हतप्रभ रह गए । कोई भी उस असहाय बच्चे को बचाने के लिए सहास नहीं जुटा पा रहा था । यह देखकर श्री अरूण थामस ने प्रचंड नदी में छलांग लगा दी और पानी में काफी देर तक संघर्ष करने के बाद तथा नाव में सवार अन्य व्यक्तियों की मदद से उस बच्चे को बचाने में सफलता प्राप्त की ।

2. श्री अरूण थामस ने अपनी स्वयं की जान को जोखिम की परवाह किए बिना एक बच्चे की जान बचाने में सहास और तत्परता का परिचय दिया ।

14. श्री एडीसन वर्गीस,
कुरीतरा हाउस,
पुलिनकुन्नु डाकघर,
जिला अल्लपाझा,
केरल ।

28-5-1997 को एक होटल में काम करने वाला प्रवीण नामक एक 18 वर्षीय लड़का इडुक्की जिले में मारियल कडावु में लोअरपुझा नदी के उथले भाग में स्नान करते समय गहरे पानी में फिसल गया । लड़का पानी के तेज प्रवाह में बह गया और डूबने लगा । उस दिन मूलामटम पावर हाउस से आ रहे पानी के कारण नदी में उफान आया हुआ था । अनेक लोगों ने इस दुर्घटना को देखा, परन्तु इस असहाय लड़के की जान बचाने के लिए तूफानी जल में कूदने का कोई भी साहस नहीं कर सका । यह देखकर दूसरी ओर स्नान कर रहे श्री एडीसन डूबते हुए बच्चे को बचाने के लिए तैर कर उस ओर आए, और डूबते हुए लड़के को मजबूती से पकड़ लिया और तैर कर नदी के किनारे पर ले आए ।

2. श्री एडीसन ने अपनी जान के जोखिम की परवाह किए बिना एक लड़के की जान बचाने में साहस और तत्परता का परिचय दिया ।

15. श्री जी. जयचन्द्रन पिल्लै,
पुकुवल पुत्तन वीडु,
चौन्डाकुन्नु, माधवपुरम,
पो. टिटेनियम,
तिरुवनन्तपुरम,
केरल ।

3-11-1996 को लगभग शाम 2.30 बजे दक्षिण अफ्रीका के एक दम्पति और बंगलौर के एक परिवार के तीन सदस्यों सहित, जिनमें एक बच्चा भी शामिल है, 5 पर्यटक—वेली पर्यटक झील, तिरुवनन्तपुरम में नौकायन का आनन्द ले रहे थे । तभी अचानक बीचों-बीच नाव उलट गई और पर्यटक झील में गिर गए । वे मदद के लिए चीखने-चिल्लाने लगे । उनकी पुकार सुनकर, झील के किनारे लोग इकट्ठे हो गए किन्तु कोई भी उनके बचाव के लिए आगे नहीं आया । यह देख कर दुर्घटना स्थल से लगभग 75 मीटर दूर झील की दूसरी ओर खड़े श्री जयाचन्द्रन पिल्लै मदद के लिए दौड़े आए और नाव के चालक की मदद से एक-एक करके सभी पांचों पर्यटकों को बचा लिया । बहादुरी के इस कार्य से प्रत्येक व्यक्ति को बचाने के लिए उन्हें 100 मीटर तक तैरना पड़ा । वे एक-एक करके हर व्यक्ति के बाल पकड़ कर उन्हें किनारे पर ले आए ।

2. श्री जी. जयाचन्द्रन पिल्लै ने अपनी जान के जोखिम की परवाह न करते हुए वेल्ली झील में 5 व्यक्तियों की डूबने से जान बचाने में साहस और तत्परता का परिचय दिया ।

16. श्री एम. डी. शशिधरन,
माडापल्लील हाउस,
मडामोन,
वडसेरीकड़ा,
जिला पत्तनमतित्ता,
केरल ।

हर वर्ष सबरीमाला ऋतु में बड़ी संख्या में सबरीमाला तीर्थयात्री पम्बा नदी के तट पर "कडवु" में, जो सबरीमाला जाने के रास्ते में पड़ता है, स्नान के लिए आते हैं । नदी के इस हिस्से की गहराई 20 फुट है और चौड़ाई करीब 50 मीटर है । पानी एक तरफ कटे हुए हिस्से से आता है जो कि मुख्य मनराकुलंजी-सबरीमाला रोड से करीब 70 फुट की ऊंचाई पर है । इस स्थल पर धारा का प्रवाह बहुत तेज है । 16-12-1994 को सबरीमाला ऋतु के मध्य में, श्री एम. डी. शशिधरन ने जो लोक निर्माण विभाग में मल्लाह हैं, मडमान वल्लाकडवु पर विभिन्न राज्यों के 2 सबरीमाला तीर्थ यात्रियों को बचाया जो अचानक पम्बा नदी में मडमान कडवु पर नदी में गिर गए थे । उन्होंने इस तरह के साहस का परिचय पहले भी दिया है और 30-11-91 को तीन व्यक्तियों, 3-12-91 को एक व्यक्ति, 15-12-92 को एक व्यक्ति और 14-12-93 को 3 व्यक्तियों के भी प्राण बचाए हैं ।

2. श्री एम. डी. शशिधरन ने पम्बा नदी में 2 व्यक्तियों की डूबने से जान बचाने में साहस और तत्परता का परिचय दिया है ।

17. श्री एन. चन्द्रन,
पुत्र श्री प्रभाती,
मदथिल हाउस, तेवरकुलम,
पो. कोडुवयूर, पालकाड,
केरल ।

31-3-96 को लगभग सायं 5.00 बजे श्री चन्द्रन तेवरकुलम तालाब में नहाने के लिए गए । बंद पर पहुंच कर उन्होंने देखा कि तालाब में एक युवक जीवन के लिए संघर्ष कर रहा है । घटना के समय तालाब का जलस्तर 4 मीटर था । इसे देखकर, श्री चन्द्रन शारीरिक रूप से विकलांग होते हुए भी तालाब में कूद पड़े और अपनी जान को जोखिम की परवाह न करते हुए युवक को बचाकर सुरक्षित स्थान तक ले आए ।

2. शारीरिक रूप से विकलांग होते हुए भी श्री एन. चन्द्रन ने अपनी जान की परवाह किए बिना एक व्यक्ति को तालाब में डूबने से बचाने में साहस और तत्परता का परिचय दिया ।

18. श्री नजीर,
पुत्र अब्,
कोलमपराम्बिल हाउस,
अझीकोड जेट्टी,
अझीकोड गांव,
कोडुंगल्लूर तालुक,
त्रिशूर जिला,
केरल ।

24-6-1996 को जब पांच मछुआरे मछली पकड़ने के लिए गहरे समुद्र की ओर बढ़ रहे थे तभी समुद्र तट से 8 कि. मी. की दूरी पर केरल के त्रिशूर जिले के कोडुंगल्लूर तालुक के अझीकोड में नाव उलट गई। जब इस दुर्घटना की सूचना तटवर्ती क्षेत्र में पहुंची तब श्री नजीर दौड़ कर घटना स्थल पर पहुंचे। उन्होंने समुद्र में छलांग लगा दी और उन चार मछुआरों की जान बचाने में मदद की जो समुद्र में जीवन के लिए संघर्ष कर रहे थे। दुर्भाग्यवश पांचवें मछुआरे, श्री सैद की उस समय तक मौत हो चुकी थी।

2. श्री नजीर के वीरतापूर्ण, साहसिक और सामयिक कार्य के कारण चार व्यक्तियों की जान बचायी जा सकी, हालांकि ऐसा करने में स्वयं उनकी जान को खतरा था।

19. सुश्री पी. सुशीला,
पुत्री पी. जानकी अम्मा,
पल्लाट हाउस,
तिरुवनवाड,
त्रिशूर जिला,
केरल।

28-9-1996 को लगभग शाम को 5 बजे सुश्री पी. सुशीला खरीदारी के लिए बाजार जा रही थीं। रास्ते में उन्हें उत्तर से दक्षिण दिशा की ओर जाने वाली दोहरी रेलवे लाइन पार करनी पड़ी। जब वह क्रासिंग पर पहुंची तो पहली पटरी पर एक रेलगाड़ी दक्षिण की ओर आ रही थी। जब रेलगाड़ी गुजरी तो उन्होंने देखा कि तीन व्यक्ति (अर्थात् श्रीमती लक्ष्मी अम्माल दादी, उनकी पुत्रवधू और उसका 4 वर्षीय पुत्र) पटरी के किनारे-किनारे उत्तर की ओर जा रहे थे। दादी पीछे छूट गई थी। उस समय बंगलौर जा रही आईलैण्ड एक्सप्रेस रेलगाड़ी उनके पीछे से आते हुए उत्तर की ओर बढ़ रही थी। जब दादी ने रेलगाड़ी की आवाज सुनी तो वह जड़ हो गई। सहायता के लिए उनकी आवाज सुनकर, पुत्रवधू उन्हें खतरे से बचाने के लिए पीछे मुड़कर दौड़ी परन्तु उसका प्रयत्न निष्फल सिद्ध हुआ। सास गाड़ी के नीचे आ चुकी थी इस बीच बच्चा पुत्रवधू से अकेला छूट गया था। बच्चे को उस रेल की पटरी पर देखकर, जिस पर रेलगाड़ी तेजी से बढ़ती चली आ रही थी, सुश्री सुशीला दौड़ी और अपने जीवन को भयंकर खतरे में डालकर पटरी पर साहसपूर्वक कूद पड़ी। बड़ी फिरती से पटरी पर छलांग लगाकर बच्चे को गाड़ी के सामने से खींच लिया। सास ने तो दम तोड़ दिया था, परन्तु पुत्रवधू को चोटें आईं और उसे अस्पताल में दाखिल कराया गया।

2. सुश्री पी. सुशीला ने अपनी जान को गंभीर जोखिम में डालकर 4 वर्षीय बालक को रेलगाड़ी से कुचले जाने से बचाने में साहस और सूझबूझ का परिचय दिया।

20. श्री पुतालाल वीरांकुट्टी,
पुतालालहाउस,
पुलाकोड गांव,
कोझिकोड तालुक,
कोझीकोड जिला,
केरल।

12-1-1997 को दो बच्चे और उनकी सौतेली मां चेरुपरावाझीगीपुझा (वालसंगलम पंचायत, कोझीकोड जिला, केरल राज्य) में नहा रहे थे तो पानी की तेज धारा में बह गए। घटना स्थल पर मौजूद लोगों की चीख चिल्लाहट सुन कर आस-पास मौजूद एक ग्रामीण मछुआरे वीरांकुट्टी ने नदी में छलांग लगा दी और उन्हें डूबने से बचा लिया। राज्य सरकार के अनुसार, श्री वीरांकुट्टी विगत में भी विभिन्न अवसरों पर छः लोगों की जान बचाने में सहायक हुआ था।

2. श्री पुतालाल वीरांकुट्टी ने अपनी जान को जोखिम में डालकर तीन व्यक्तियों को डूबने से बचाने में साहस और सूझबूझ का परिचय दिया।

21. श्री सी. एच. लक्ष्मण,
पुत्र सुन्दरा पारोप्पीड चेनावकोड,
मधुर गांव,
पो. हिदायत नगर,
कासारगोड जिला,
केरल।

28-9-1996 को सुबह 10 बजे श्रीमती सीतावती अपनी 15 और 9 वर्ष की दो पुत्रियों के साथ कासारगोड जिले के मधुर गांव के एक तालाब पर स्नान करने और कपड़े धोने के लिए गई थीं। तालाब में पानी 12 से 15 फीट गहरा था। जबकि मां कपड़े धो रही थी तभी छोटी लड़की अचानक तालाब में गिर पड़ी। बड़ी लड़की ने अपना हाथ बढ़ाकर उसे बाहर खींचने की कोशिश की परन्तु वह भी तालाब में आ गिरी। इसे देखकर मां अपने बच्चों को बचाने के लिए दौड़ी, परन्तु वह भी तालाब में गिर पड़ी। मदद के लिए उनकी गुहार सुनकर श्री सी. एच. लक्ष्मण घटनास्थल पर दौड़ा आए और अपनी जान को जोखिम में डालकर तालाब में कूद पड़े तथा एक-एक कर तीनों को बाहर निकाल कर सुरक्षित किनारे तक पहुंचाया।

2. श्री सी. एच. लक्ष्मण के सामयिक और साहसिक कार्य के कारण तीन व्यक्तियों की जान बच सकी।

22. कांस्टेबल अब्दुल रहमान,
द्वारा पुलिस अधीक्षक,
दुर्ग,
मध्य प्रदेश।

20-12-1995 को लगभग रात्रि 9.30 बजे इन्दी बाजार, दुर्ग (म. प्र.) में लगी आग ने श्री अशोक जैन की बीड़ी/तम्बाकू की दुकान और श्री मनमल जैन की कपड़े की दुकान को जलाकर राख कर दिया। दुर्ग थाने में सूचना मिलने पर इंस्पेक्टर एस. के. ए. नकवी की अगुवाई में एक टीम घटना स्थल

पर पहुंची। श्री मनमल जैन की आग में फंसे होने की बात जानकर, पुलिस टीम का एक सदस्य अब्दुल रहमान अपनी जान की परवाह न करते हुए आग में कूद पड़ा और श्री जैन को बचा लिया।

2. कांस्टेबल अब्दुल रहमान ने अपनी जान को जोखिम में डालकर एक व्यक्ति की जान बचाने में पहल, तत्परता और साहस का परिचय दिया।

23. कांस्टेबल जगदीश सिंह,
कांस्टेबल सं.-140,
पुलिस स्टेशन बरेला,
जि. जबलपुर,
मध्य प्रदेश।

4.2.1996 को लगभग प्रातः 7 बजे जब कांस्टेबल जगदीश सिंह कुछ व्यक्तियों को समन तामिल करने जा रहा था तभी उसने एक कुंए के पास कुछ औरतों की चीख पुकार सुनी। दौड़कर वह घटनास्थल पर पहुंचने पर उसने पाया कि एक 14 वर्षीय लड़की कुंए में गिर पड़ी थी। कुंआ 100 फुट गहरा था और उसमें पानी भरा हुआ था। असहाय लड़की हताश होकर मदद की गुहार कर रही थी परन्तु वहां एकत्र भारी भीड़ में से कोई भी उसे बचाने का साहस न बटोर सका क्योंकि बचाने वाले की जान के लिए भी खतरा था। इसे देखकर कांस्टेबल जगदीश सिंह ने अपने प्राणों की परवाह न करते हुए पूरी वर्दी पहने हुए ही कुंए में छलांग लगा दी। डूबने वाली लड़की ने उसे कसकर पकड़ लिया। 30 मिनट के कड़े संघर्ष के बाद वह लड़की को सुरक्षित बचाने में सफल रहा। लड़की को केवल मामूली चोटें आईं। उसके इस साहसिक कार्य की अखबारों, नगर पंचायत और आम जनता ने प्रशंसा की।

2. कांस्टेबल जगदीश सिंह ने 14 वर्षीय लड़की को कुंए में डूबने से बचाने में अनुकरणीय पहल, तत्परता और साहस का परिचय दिया।

24. मास्टर मेघराज थापा, (मरणोपरांत)
7वां मिल्स अपर शिलांग,
ईस्टर्न एयर कमांड हेडक्वार्टर्स,
ईस्ट खासी हिल्स जिला मेघालय।

12 मई, 1997 को लगभग सुबह 8.30 बजे राम गोरखा हाईस्कूल, अपर शिलांग की 7वीं कक्षा का छात्र मास्टर मेघराज थापा (15 वर्ष) अपने छः अन्य साथियों के साथ अपर शिलांग स्थित एलीफेंटा फाल्स के पास खेलने के लिए गया था। लगभग 11 बजे उनमें से एक छात्र मास्टर किशन सिंह (11 वर्ष) जब नदी के किनारे से फूल तोड़ रहा था तो फिसल कर तेज बहते गहरे पानी में गिर पड़ा और डूबने लगा। उस स्थान पर नदी की गहराई 15-20 फीट थी। इसे देखकर और यह जानकर कि मास्टर किशन सिंह तैरना नहीं जानता था, मास्टर मेघराज थापा धारा में कूद पड़ा और मास्टर किशन सिंह को सुरक्षित बचाने में सफल रहा। ऐसा करते समय, उसकी एक टांग पानी के बीच पड़े पत्थरों में फंस गई। वह अपने आपको नहीं बचा सका और डूब गया जिस समय उसे पानी से बाहर निकाला गया तब तक काफी देर हो चुकी थी और वह दम तोड़ चुका था।

2. मास्टर मेघराज थापा ने जीवन को गंभीर खतरा होते हुए भी अपने मित्र की जान बचाने के लिए उत्कृष्ट साहस, वीरता और सूझबूझ का परिचय दिया तथा ऐसा करते हुए उन्होंने अपने प्राणों का बलिदान कर दिया।

25. प्यू. एच. हरंगलिना,
प्रधानाध्यापक, लुंगडियान,
छिमतुईपुई जिला,
मिजोरम।

दिनांक 18-3-1996 को लुंगडियान के ग्रामीणों ने यह निश्चय किया कि झूम की खेती के लिए पास के खेतों/जंगल को जला दिया जाए और साफ कर दिया जाए। इस काम पर तैनात ग्रामीणों ने अपने आपको 3 दलों में बांट लिया और अपने-अपने स्थान की ओर जाने के लिए अलग-अलग चले गए, जबकि उन्हें अन्य दलों की जगह/स्थान स्थिति की जानकारी नहीं थी। तीसरे दल के पहुंचने का इन्तजार किए बिना पहले दल ने झूम में आग लगा दी। इस कारण 58 वर्षीय वृद्ध प्यू. नगूनहमूंगा तेजी से फैल रही आग में फंस गए। चूंकि वह पूरी तरह से आग में घिर गए थे, इसलिए तेज आग से बचकर निकलने का कोई रास्ता नहीं था। बुरी तरह डरे हुए और पूर्णतया गतिहीन प्यू. नगूनहमूंगा को तेज आग में रहने दिया गया। ऐसे मौके पर जीवन को जोखिम और खतरे की परवाह न करते हुए प्यू. एच. हरंगलिना आग में चले गए और प्यू. नगूनहमूंगा को सुरक्षित बाहर निकाला जब कि उनके दल के अन्य तीन सदस्य किसी प्रकार की सहायता करने का साहस नहीं जुटा पाए और वे केवल दर्शक बने रहे।

2. प्यू. एच. हरंगलिना ने 19-5-1994 को भी इसी प्रकार का बहादुरी का कार्य किया था जब उन्होंने प्यू. एल. पियांगा की जान कलोडाइन नदी में डूबने से तब बचाई जब प्यू. एल. पियांगा अकस्मात नदी में गिर गए और नदी के तेज बहाव में बह गए थे।

3. प्यू एच. हरंगलिना ने अपनी जान को गम्भीर जोखिम की परवाह न करते हुए एक वृद्ध व्यक्ति की जान बचाने में साहस और तत्परता का परिचय दिया।

26. प्यू. टी. दुआईलीवा,
तलानगनुअम वेंगथर,
आइजौल,
मिजोरम।

दिनांक 23-7-1997 की रात मिजोरम राज्य के आइजोल जिले में बहुत तेज आंधी आई और मूसलाधार वर्षा हुई। उस रात लगभग 11 बजे टैक्सी ड्राईवर श्री टी. दुआईलीवा जब अपनी सवारियों को छोड़कर घर लौट रहे थे तब उन्होंने छोटे से गांव तुइखुरहलू में सड़क की ओर से (राष्ट्रीय राजमार्ग 54) किसी महिला की चीख सुनी। पूरा अंधेरा होने और

बिजली न होने के कारण वह कुछ नहीं देख सके । तथापि वह अपनी टैक्सी से उतरे और कीचड़ वाले रास्ते से उस ओर गए जिधर से चीखें आ रही थीं । उनके हाथ-पांव कीचड़ में धंस गए थे । उन्होंने देखा कि भूस्खलन के कारण पहाड़ी पर बना एक घर बह गया था । बहुत सी खरोंच आ जाने और चोट लगने के बावजूद वह ढालू कीचड़ के नीचे से आ रही महिला की चीख की आवाज की ओर बढ़े ।

2. अपनी स्वयं की जान की परवाह न करते हुए उन्होंने महिला को बचाया और वह अंधेरे और तूफान में रास्ता बनाते हुए ढालू कीचड़ से महिला को अपने कंधे पर सड़क पर सुरक्षित स्थान पर ले आए क्योंकि उस महिला की कमर की हड्डी जगह से हट जाने और फ्रैक्चर हो जाने के कारण स्वयं नहीं चल सकती थी । पीड़ित महिला को अगले दिन अस्पताल में दाखिल किया गया ।

3. यह भूस्खलन इतना प्रचण्ड और विध्वंसक था कि वह घर की मलबे और घर के सामान को मूल स्थान से लगभग 1 कि. मी. दूर और उस महिला को लगभग 100 फुट दूर तक ले गया । इस भूस्खलन में घर के मालिक की मृत्यु हो गई और उनका शव घर के मूल स्थान से 1 कि. मी. दूर मिला ।

4. श्री टी. दुआईलोवा ने स्वयं की जान को खतरे की परवाह न करते हुए बहुत प्रतिकूल परिस्थितियों में एक महिला की जान बचाने में साहस और तत्परता का परिचय दिया ।

27. श्री बिचित्र मलिक,
ग्राम बधुवासुनी,
थाना राज कनिका,
जिला केन्द्रपाड़ा,
उड़ीसा ।

दिनांक 4-6-97 को पूर्वाह्न लगभग 11 बजे लगभग 38 वर्ष के श्री हरिहर मलिक अपने पुराने और प्रयोग न किए जा रहे कुएं को मरम्मत करने के लिए उसमें गए । कुआं लगभग 20 फुट गहरा है और घटना के समय कुएं में पानी 6 फुट गहरा था । जब हरिहर मलिक कुएं में गए, वहां जहरीली गैस थी जिसके कारण वह बाहर नहीं आ सके और कुएं में डूब गए । यह देखकर, हरिहर मलिक के चचेरे भाई श्री हेमन्त मलिक, श्री हरिहर मलिक को बचाने के लिए कुएं में गए । परंतु जहरीली गैस के प्रभाव के कारण वह भी कुएं से बाहर नहीं आ सके । इसके बाद हरिहर मलिक के छोटे भाई श्री निराकार मलिक ने उक्त दो व्यक्तियों को बचाने की कोशिश की परंतु अपने प्रयास में असफल रहे और वह भी कुएं में फंस गए । उक्त तीन व्यक्तियों को बचाने के लिए, हरिहर मलिक के बड़े भाई श्री महन्ता उर्फ अलेखा प्रसाद मलिक कुएं में गए परन्तु उन पर भी जहरीली गैस का असर हो गया और कुएं से बाहर नहीं आ सके ।

2. इस संकटकालीन स्थिति में कुएं से बाहर इकट्ठे हो गए व्यक्तियों में से बाहरी व्यक्ति और रिक्शा चालक श्री बिचित्र मलिक स्वयं की जान को खतरे की परवाह न करते हुए रस्सी से कुएं में गए तथा दो व्यक्तियों अर्थात् श्री महन्ता उर्फ अलेखा प्रसाद मलिक और श्री निराकार मलिक, जो तब तक बेहोश हो गए थे, की जान बचाई । उन्हें इलाज के लिए तुरंत अस्पताल ले जाया गया और वे बच गए । श्री हरिहर मलिक को घटना स्थल पर बाद में पहुंचे फायर ब्रिगेड ने बाहर निकाला, उनकी अस्पताल में मृत्यु हो गई ।

3. श्री बिचित्र मलिक ने अपनी जान को गंभीर खतरे की परवाह न करते हुए दो व्यक्तियों की जान बचाने में साहस और तत्परता का परिचय दिया ।

28. श्रीमती अनीता यादव (मरणोपरान्त)
पत्नी श्री कृपा दयाल यादव,
पार्षद खैरली मण्डी,
जिला अलवर,
राजस्थान ।

29. श्री गोपाल नेपाली, (मरणोपरान्त)
मोहल्ला कजोड़िका,
खैरली गंज, खैरली,
जिला अलवर,
राजस्थान ।

16-17 दिसम्बर, 1996 की रात्रि को घातक हथियारों से लैस कुछ डाकू श्री संतोष जय भगवान के घर में घुसे । चौकीदार की चिल्लाहट तथा गोलियों की आवाज सुनकर श्री कृपा दयाल यादव तथा उनकी पत्नी श्रीमती अनीता यादव अपने पड़ोसी की मदद लिए दौड़े तथा डाकुओं को पकड़ने की कोशिश की । उसी समय एक डाकू ने श्रीमती अनीता यादव पर गोली चला दी । श्रीमती यादव की घटनास्थल पर ही मृत्यु हो गई । श्री संतोष जय भगवान के नौकर श्री गोपाल नेपाली भी सशस्त्र डाकुओं से भिड़ गया तथा अपनी जान के जोखिम की परवाह न करते हुए एक लकड़ी के डण्डे के साथ बहादुरी से सशस्त्र डाकुओं से लड़ा । इस हाथापायी में डाकुओं ने उसे भी गोली से मौत के घाट उतार दिया । इस घटना की सूचना प्राप्त होने पर बाद में पुलिस ने इस घटना में शामिल 8 डाकुओं को गिरफ्तार कर लिया ।

2. श्री संतोष जय भगवान के जानमाल की रक्षा करने के प्रयास में श्रीमती अनीता यादव तथा श्री गोपाल नेपाली ने साहस एवं तत्परता का परिचय दिया तथा ऐसा करते हुए अपने प्राणों का बलिदान कर दिया ।

30. श्री अजीज-उर-रहमान,
मदर कलोनी,
मस्जिद के पास,
बांसवाड़ा,
राजस्थान ।

31. श्री हरी राम यादव,
वर्कशाप राजस्थान राज्य सड़क परिवहन निगम,
बांसवाड़ा,
राजस्थान ।

श्री अजीज-उर-रहमान परिचालक तथा हरी राम यादव, चालक राजस्थान राज्य सड़क परिवहन निगम की बस (बांसवाड़ा डिपो की पंजीकरण संख्या आर. जे. 14पी. 541) पर ड्यूटी पर थे। यह बस 2-9-1996 को सांय 8.30 बजे जयपुर से बांसवाड़ा के लए रवाना हुई। जब यह बस 3-9-1996 को प्रातः 7.30 बजे प्रतापगढ़ पहुंची तो यात्रियों के भेष में चार डाकुओं सहित बहुत से व्यक्ति बस में चढ़े। जब बस प्रतापगढ़ से लगभग चार किलोमीटर दूर एक जंगल से गुजर रही थी तो नारकोटिक विभाग के कर्मचारियों ने बस को जांच के लिए रोका। उन्होंने यात्रियों के सामान की जांच की। उन्हें डाकुओं के सामान में एक गैर लाइसेंसी भरा हुआ रिवाल्वर, चार गोलियां (कारतूस), एक रामपुरी चाकू तथा एक नाइलौन की रस्सी मिली। बस के परिचालक श्री अजीज-उर-रहमान ने भी इन चार व्यक्तियों के पास इन चीजों को देखा था। नारकोटिक विभाग के कर्मचारियों ने भी बस के चालक तथा परिचालक को इन चार व्यक्तियों को पुलिस प्राधिकारियों के सुपुर्द करने की सलाह दी क्योंकि राज्य सरकार के अनुसार यह मामला नारकोटिक्स विभाग के क्षेत्राधिकार में नहीं आता। जब नारकोटिक्स विभाग के कर्मचारी उतर गए और बस ने अपनी आगे की यात्रा आरम्भ की तब कंडक्टर ने बुद्धिमानी दिखाते हुए इन व्यक्तियों को कुछ नहीं कहा। जब बस सुहागपुर पहुंची श्री रहमान ने बस ड्राईवर को तुरन्त पुलिस स्टेशन पर बस रोकने को कहा। सर्वश्री रहमान एवं यादव ने तब पुलिस को डकैतों को पकड़ने में मदद की। एक डकैत उस गड़बड़ी में भाग निकला। बस बांसवाड़ा के लिए चल पड़ा। चौथा डकैत जो बस में छिपा हुआ था उसे बांसवाड़ा में दबोचा एवं पुलिस को सौंपा गया। इस प्रकार से श्री अजीज-उर-रहमान एवं हरीराम यादव ने डकैतों की गिरफ्तारी में पुलिस की मदद की और बस में सवार यात्रियों की जान-माल की रक्षा की।

2. सर्वश्री अजीज-उर-रहमान एवं हरीराम यादव ने बस यात्रियों के जान-माल की रक्षा करने तथा डकैतों की गिरफ्तारी में मदद करके बुद्धिमानी, साहस तथा तत्परता का प्रदर्शन किया।

32. श्री धन्ना राम,
सुपुत्र श्री केराराम मीना,
पो. आ. कीरवा, तहसील पाली,
राजस्थान।

33. श्री मोहन लाल,
सुपुत्र श्री भागाराम मीना,
ग्राम एवं पो. आ. कीरवा,
तहसील पाली,
राजस्थान।

26-5-96 को सुबह 9.00 बजे, 35 वर्षीय श्रीमती आंची, पत्नी श्री केनाराम, अपने चार बच्चों, नामतः मास्टर जीमराम (10 वर्ष), मास्टर देवाराम (6 वर्ष), रेखा (3 वर्ष) तथा मास्टर नारायन (2 वर्ष) को लेकर ग्राम कीरवा के पास कापरेटिव स्टोर के पास एक पुराने कुएं में कूद गई। 16 फीट लंबा, 9 फीट चौड़ा तथा 70 फीट गहरा कुआं, 45 फीट के स्तर तक पानी से भरा था। यह देखकर कुमारी नाजू, जो कुएं के पास कपड़े धो रही थी, ने सहायता के लिए शोर मचाया जिसे सुनकर श्री धन्ना राम जो पास के मकान में उस वक्त खाना खा रहे थे घटनास्थल की ओर भागे और उन्होंने कुएं में छलांग लगा दी। श्री मोहन लाल भी जो वहां श्री धन्ना राम के साथ थे उनके पीछे कुएं में कूद गए। दोनों ने श्रीमती आंची, कु. रेखा और मास्टर नारायन को अचेतावस्था में ही, वहां जमा हुए लोगों द्वारा दी गई पगड़ियों से बांधकर बाहर निकाल लिया। मास्टर देवाराम तथा मास्टर जीतराम को भी अचेतावस्था में पगड़ियों से बांधकर बाहर निकाल लिया गया तथापि, अस्पताल ले जाते हुए मास्टर देवाराम और मास्टर जीत राम की मृत्यु हो गई।

2. सर्वश्री धन्ना राम एवं मोहन लाल ने कुएं में डूबते हुए तीन व्यक्तियों की जान बचाने में साहस तथा तत्परता का परिचय दिया।

34. श्री धरम सिंह बाल्मीकि,
संस्कृति विभाग, सिक्किम सरकार,
ताशीलिंग सचिवालय,
गंगटोक।

8 जून, 1997 की रात गंगटोक तथा उसके आसपास के क्षेत्रों में भारी रूप से भूमि खिसकने से अभूतपूर्व गंभीर प्राकृतिक आपदा आ गई थी। नागरिक सुविधाएं ठप्प पड़ गई, कई घर गिर गए, कई लोगों की जानें गई। श्री धरम सिंह बाल्मीकि ने बाजार से लौटते समय देखा कि गंगटोक के डेवलपमेंट एरिया के पास की सड़क के नाले से होकर पानी के ऊपर आने से सड़क डूब रही थी। वहीं पर जिला कलेक्टर (दक्षिण) के घर सहित और भी अनेक घर थे।

2. श्री बाल्मीकि खतरे को भांप कर जिला कलेक्टर (दक्षिण) के घर भागे तथा उनके परिवार के सदस्यों को इस आने वाली आपदा के बारे में बताया। उन्होंने जिला कलेक्टर के घर के आसपास बसे लोगों को भी इसकी सूचना दी। इस सूचना को पाकर वे सभी लोग जो लगभग पंद्रह थे, तुरन्त घर छोड़कर भागे और उनके जाते ही एक भयंकर भूस्खलन ने इन मकानों को गिरा दिया इस भूस्खलन का प्रभाव इतना खतरनाक था कि इससे 16 व्यक्ति जीवित ही भूमि के नीचे दबकर मर गए।

3. श्री बाल्मीकि ने अपनी जान को जोखिम में डालकर बुद्धिमानी तथा साहसपूर्ण कार्य से पंद्रह लोगों की जानें बचाई।

35. श्री राजेन्द्र सिंह दंदार,
आई. एन. एस. राजपूत,
मार्फत एफ एम. ओ., विशाखापट्टनम,
आंध्र प्रदेश।

14-3-1996 को 19.30 बजे श्री दामोदर जो नौसेना डॉकयार्ड में कर्मचारी हैं, जो अपनी मोपेड अनियत गति से पीतघाट पर चला रहे थे और एन-22 जेटी में गिर पड़े। वे तैरना नहीं जानते थे अतः वे डूबने लगे तो सहायता के लिए चिल्लाने लगे।

यह देखकर श्री राजेन्द्र सिंह कंवार, एस. ई. ए.-1 (एस. डी.) सं. 175312एन, जो किनारे की ओर से वापस कुछ ही दूरी पर जा रहे थे, तुरन्त घटनास्थल की ओर दौड़े और श्री वीमादू को बचाने पानी में कूद पड़े। उनके पास पहुंचकर श्री राजेन्द्र सिंह कंवार ने श्री वीमादू जो आधी बेहोशी तथा मरणासन्न की दशा में कमर के आसपास जीवन रक्षक पेटी (लाईफबाय) बांधी। श्री राजेन्द्र सिंह कंवार 50 फीट की दूरी तक तैरे और श्री वीमादू को पत्तघाट सीढ़ी तक बड़ी कठिनाई से बचाकर ले आए क्योंकि ज्वार भाटे की वह रात बहुत अंधियारी हो चुकी थी। तत्पश्चात उन्होंने श्री वीमादू के पेट से पानी निकालकर प्राथमिक उपचार किया और उनकी सांस सामान्य करने के लिए अन्य उपाय भी किए।

2. श्री राजेन्द्र सिंह कंवार ने साहस और तत्परता दिखाते हुए अपनी जान खतरे में डालकर एक पूर्णतः असहाय व्यक्ति की जान बचाई।

36. जी.एस.-172077एन अधीक्षक,
बी/आर ग्रेड-2 राम नरेश,
397-आर. एम. पी., 70 आर. सी. सी.
(जी. आर. ई. एफ.),
मुख्यालय 38, बी. आर. टी. एफ.,
परियोजना दीपक।

397 रोड रख-रखाव प्लाटून के जी. एस. 172077 एन अधीक्षक बी/आर ग्रेड-2 राम नरेश को मनाली-सरचू रोड के दारचा स्थान पर एक 'बैली-ब्रिज' और 'सार्जेंट वाल' का आधार बनाने के लिए प्रभारी पर्यवेक्षक नियुक्त किया गया था। नदी का पानी 10 से 12 (समुद्री मील) नाट की गति से बह रहा था। पुल बनाने के उपकरणों की कमी होने से 160 फीट की जगह 130 फीट टी. एस. बैली पुल बनाने की योजना बनाई गई थी, जो बनने में भी सरल था। परिणामस्वरूप, बहती नदी के भीतर ही आधार बनाए जाने थे।

2. दिनांक 10-7-96 को 16.45 बजे एक आधार बनाते समय एक मजदूर श्री राजू राय नदी के सबसे गहरे भाग में अचानक दुर्घटनावश गिर गया। यह देखकर सभी कर्मचारियों ने शोर मचाया और वे नदी की ओर भागे। श्री राम नरेश अधीक्षक बी/आर ग्रेड-2 बेहिचक और अपनी जान की परवाह किए बिना नदी में कूद पड़े तथा उन्होंने श्री राजू राय को डूबने से बचा लिया।

3. जी. एस. 172077 एन अधीक्षक बी/आर ग्रेड-2 श्री राम नरेश ने इस प्रकार साहस शौर्य तथा बुद्धिमानी का प्रदर्शन करते हुए अपनी जान की परवाह न करते हुए एक मजदूर की जान बचाई।

37. मास्टर कुजयासांमयम राजीव शर्मा,
सगाकीथेल लेमाखुंग लीकाई,
इम्फाल,
मणिपुर।

मास्टर के. राजीव शर्मा छुट्टियां मनाने अपने मित्र मास्टर भाग्यबन के घर गए थे। दिनांक 21 दिसम्बर, 1996 को आधी रात के आसपास मास्टर राजीव धूएं के कारण नींद से जाग गए। आंखें खोलने पर उन्होंने (रसोई घर से जुड़े) दरवाजे को जलते देखा। खतरा भांपते हुए वह आग की लपटों से गुजर कर प्रथम मंजिल पर भागते हुए गए जहां मास्टर भाग्यबन के 19 वर्षीय भाई श्री मांगलेमजाउ (विकलांग) सोए थे। जब मास्टर श्रीमांगलेमजाउ ने बिस्तर छोड़ने से मना किया तब मास्टर राजीव ने उन्हें एक "धोती" से बांधा और उसका दूसरा सिरा एक लकड़ी के खम्भे से बांध दिया। चूंकि लकड़ी की सीढ़ियां पहले ही जल रही थी, मास्टर राजीव ने श्री मंगलेमजाउ को निचली मंजिल पर धकेला तथा स्वयं भी नीचे रेत के टीले पर कूद गए। परन्तु थक कर वह अब बेहोश हो गए थे। परिणामस्वरूप उन्हें जल जाने तथा चोटों के लिए औषधीय चिकित्सा दी गई।

2. मास्टर के. राजीव शर्मा ने एक विकलांग बालक की जान बचाने में अपूर्व शौर्य तथा तत्परता दिखाई।

38. कुमारी प्रगति सेठ,
13, डी. डी. ए. फ्लैट्स (ओर. पी. एस.),
मानसरोवर पार्क, शाहदरा,
दिल्ली।

घटना 7 फरवरी, 97 की है। दरवाजा खटखटाने की आवाज सुनकर कुमारी प्रगति दरवाजा खोलने गई। तार की जाली से बाहर अपने चचेरे भाई श्री सागर को खड़ा देखकर उसने दरवाजा खोल दिया। जैसे ही दरवाजा खुला सागर और उसके 2/3 साथी तीसरी मंजिल के फ्लैट में घुस गए और उन्होंने कुमारी प्रगति को रसोईघर में खींचकर कटार से उसका गला काट दिया। तब उन्होंने कुमारी प्रगति को खून से लथपथ हालत में रसोईघर की फर्श पर छोड़कर नकदी एवं कीमती समान के लिए घर की तलाशी ली। जिस एक कमरे की तलाशी ली गई थी उनमें से एक में सोए हुए अपने पांच वर्ष के भाई मास्टर गौरव की चिंता में कुमारी प्रगति ने अपने आपको घसीटते हुए उस कमरे को कुंडी लगाने की कोशिश की जिसमें अपराधी घुस चुके थे। लेकिन उनका यह प्रयास विफल रहा क्योंकि वह लगभग बेहोशी की हालत में पहुंच गई थी। इस तरह बदमाशों का ध्यान उसकी ओर गया। उन्होंने फिर से उसके गले पर वार किया, उसकी बाजुएं मरोड़ दी और उसके सिर पर प्रहार किया। फ्लैट की भली-भांति तलाशी लेने के पश्चात घुसपैठिए चले गए। काफी प्रयास के बाद कुमारी प्रगति खुद को घसीटकर बाहर टेरेस तक आई और बदहवासी की हालत में अपने एक पड़ोसी श्री राजेश गुप्ता को अपनी ओर बुलाने का प्रयास करने लगीं। यह जानकर कि उसे सहायता की आवश्यकता है, श्री गुप्ता उसकी सहायता के लिए दौड़े आए और अस्पताल ले गए।

2. कुमारी प्रगति को 24 घंटे के पश्चात् होश आया। उसकी श्वासनली काट दी गई थी और उसका बायां हाथ अभी तक बेकार है।

3. कुमारी प्रगति सेठ ने लुटेरों का बहादुरी से सामना करने में साहस और तत्परता का परिचय दिया ।

39. मास्टर अमित कुमार,
नजरपुर, डाकघर जामकुंडा,
तहसील जुन्नारदेव,
जिला छिंदवाड़ा,
मध्य प्रदेश ।

मई 8, 1997 को मास्टर रामभरोसे और मास्टर बबलू (दोनों की उम्र 5 वर्ष) गांव नजरपुर में एक कुएं के नजदीक खेल रहे थे जो निर्माणाधीन है । दुर्घटनावश वे कुएं में गिर गए । कुएं की चौड़ाई 12 फीट और गहराई लगभग 14 फीट थी । घटना के समय कुएं में पानी का स्तर लगभग 4-5 फुट था । मास्टर अमित कुमार को (उम्र 15 वर्ष) जो वहां से गुजर रहा था, कुएं की ओर से आ रहा कुछ शोर सुनाई दिया । जब उसने कुएं में झांककर देखा तो मास्टर बबलू पानी में छटपटा रहा था । हालांकि वह खुद तैरना नहीं जानता था, तो भी वह कुएं में कूद गया । उसने मास्टर बबलू को उठा लिया और कुएं से बाहर निकाल लाया । मास्टर अमित तब उसे प्राथमिक उपचार दे कर होश में ले आए । जैसे ही बच्चे को होश आया उसने मास्टर अमित को मास्टर रामभरोसे के बारे में बताया । मास्टर अमित दूसरी बार कुएं में कूद पड़ा । मास्टर रामभरोसे को कुएं के तल पर पाकर मास्टर अमित उसे भी बाहर निकाल ले आए । दुर्भाग्यवश बहुत देर हो चुकी थी और तब तक मास्टर रामभरोसे आखरी सांस ले चुका था ।

2. मास्टर अमित कुमार ने एक बच्चे की डूबने से जान बचाने में साहस और तत्परता का परिचय दिया ।

40. कुमारी अमृता मिनहास,
123, बसंत एन्क्लेव,
पालम मार्ग,
नई दिल्ली ।

यह घटना 27 अक्तूबर, 1996 के अपराह्न में घटित हुई थी । श्री मिनहास का परिवार दोपहर का भोजन बाहर करके घर वापिस लौटा था । जैसे ही उनकी पुत्री कुमारी अमृता अपने कमरे में गई उसके अंदर एक अजनबी (लगभग 14 वर्ष का एक लड़का) देखा । ज्योंहि लड़के ने उसे देखा वह खिड़की से बाहर कूद गया । शायद कमरे में घुसने के लिए उसने खिड़की की ग्रिल की बीच की छड़ निकाल दी थी । बिना समय गंवाए कुमारी अमृता बाहर भागी और जैसे ही वह बाड़ के ऊपर कूदने की कोशिश कर रहा था उसे धर दबोचा । अपने आप को कुमारी अमृता की पकड़ से छुड़ाने के प्रयास में उस घुसपैठिए ने उनकी बांह में दो बार अपने दांत गड़ाए । लेकिन कुमारी अमृता ने उसे जाने नहीं दिया इसके बाद पड़ोसियों की सहायता से चोर को पुलिस के हवाले कर दिया गया ।

2. बाद में यह पता चला कि उस चोर ने उसी कालोनी में एक और चोरी की थी ।

3. कुमारी अमृता मिनहास ने चोर को गिरफ्तार करवाने में साहस और तत्परता का परिचय दिया ।

41. मास्टर हर्ष अग्रवाल,
941, कूचा सीताराम,
सीताराम बाजार,
दिल्ली ।

26 नवम्बर, 1996 को लगभग सुबह 7.20 बजे मास्टर हर्ष अग्रवाल और उसकी छोटी बहन अपने स्कूल जा रहे थे जब एक ब्लू लाइन बस ने लाल बत्ती पार की और उनकी स्कूल वैन से जा टकराई । परिणामस्वरूप वैन के ड्राइवर सहित 18 विद्यार्थियों को गंभीर रूप से चोटें आईं । वास्तव में एक विद्यार्थी की बाद में चोटों के कारण मौत हो गई ।

2. मास्टर हर्ष की दायीं टांग की दो जगह हड्डी टूट गई और उसका काफी खून बह रहा था । अपनी दायीं टांग को घसीटते हुए एक बच्चे से दूसरे बच्चे तक घिसटते हुए पहुंचकर उसने वैन के मलबे से अपनी बहन सहित तीन अन्य विद्यार्थियों को बाहर निकालने में कामयाबी हासिल की । इस बीच घटना-स्थल पर भीड़ इकट्ठी हो गई और कुछ दर्शकों ने उन्हें साइकिल रिक्शा पर बिठाने में मदद की । तब उन्हें पास के अस्पताल ले जाया गया ।

3. मास्टर हर्ष अग्रवाल ने दुर्घटना में तीन विद्यार्थियों की जान बचाने में साहस और तत्परता का परिचय दिया ।

42. मास्टर के. राजु,
पुत्र श्री के. वेंकटैय्या,
श्री राघवेन्द्र कान्वेंट के विद्यार्थी,
रजोली गांव,
विडपेल्ली (एन),
आन्ध्र प्रदेश ।

1 दिसम्बर, 1995 को 11 लोग (जिनमें मास्टर के. राजू शामिल है) एक देसी नाव में एक विवाह में शामिल होने के लिए रजोली गांव से श्री राघवेन्द्र स्वामी मन्दिर जा रहे थे । उनकी नाव जब तुंगभद्रा नदी में लगभग दो किलोमीटर चल चुकी थी तभी ड्राइवर को एक रिसाव दिखाई दिया । जैसे ही उसने नाव को नदी के किनारे खींचकर लाने के इरादे से पानी में छलांग लगाई, यात्रियों ने सोचा कि वह नाव छोड़कर भाग रहा है । सभी उसे पकड़ने के लिए दौड़े । ज्योंहि वे नाव के एक सिरे पर इकट्ठे हुए नाव उलट गई । मास्टर के. राजू ने यात्रियों में से एक साल के एक बच्चे को बचाने के लिए उसे अपने कन्धों पर उठा लिया । पानी में बहते हुए एक सटकेस को देखकर उसने सहारे के लिए उसे पकड़ लिया । तभी एक अन्य नाव जिसमें तीन किशोर सवार थे, उनके बचाव के लिए आगे आए । जबकि दुर्घटना में 11 व्यक्तियों में से छः बच गए, पांच बच गए ।

2. मास्टर के. राजू ने एक बच्चे को डूबने से जान बचाकर साहस और तत्परता का परिचय दिया ।

43. मास्टर नन्दन कुमार झा,
द्वारा श्री प्रकाश महतो,
1 टाइप, 5/4 आदित्यपुर,
जमशेदपुर,
बिहार ।

यह घटना तब हुई जब मास्टर नन्दन कुमार झा पटना में अपने रिश्तेदारों से मिलने जा रहा था । 30 अप्रैल, 1997 को अचानक लगभग 2.00 बजे बुद्ध कालोनी में एक झोंपड़ी में आग लग गई । मास्टर नन्दन कुमार झा ने जो वहां मौजूद था इसे देखा । सम्भावित खतरे को भांपते हुए वह आग की लपटों में चला गया, झोंपड़ी में फंसे असहाय जानवरों को खोला और एक बच्चे और कुछ महिलाओं की जानें बचाईं । इसके पश्चात उसने एक बाल्टी से पानी फेंककर आग बुझाने की कोशिश की । यह देखकर, कालोनी के अन्य लोग भी वहां आ गए और परिणामस्वरूप आग पर नियन्त्रण पा लिया गया । घटना में मास्टर नन्दन कुमार को जलने के कारण कई जख्म हुए ।

2. मास्टर नन्दन कुमार झा ने आग की दुर्घटना में कुछ महिलाओं और एक बच्चे की जान बचाने में साहस और तत्परता का परिचय दिया ।

44. मास्टर पीयुष दूबे,
पुत्र डा. अशोक कुमार दूबे,
सिविल डाक्टर कालोनी,
सी. एम. ओ. बंगलो कैम्पस,
सिविल लाइन्स,
अलीट गालियर रोड,
झांसी,
उत्तर प्रदेश ।

12 जून, 1996 को शाम को मास्टर पीयुष दूबे, उसका छोटा भाई हिमांशु और उनके दोस्त अपने घर के पास क्रिकेट खेल रहे थे । खेल के दौरान मास्टर पीयुष ने अधेड़ उम्र की एक महिला को एक बिजली के खंभे के पास खड़े देखा । उसके हाथ में एक बिजली की तार देखकर और अजीब सी आवाजें सुनकर मास्टर पीयुष खंभे के पास गया। यह जानकर कि उस महिला को (बाद में उसकी पहचान श्रीमती जमुना बाई के रूप में हुई) बिजली के करंट ने पकड़ लिया है, मास्टर पीयुष ने फौरन अपने भाई से क्रिकेट बैट छीना और उसकी सहायता से महिला का हाथ तार से अलग करने का प्रयास किया । जब वह सफल नहीं हुआ तो उसने महिला की कलाई पर बैट से वार करना शुरू किया । बार-बार वार करने के फलस्वरूप तार श्रीमती जमुना बाई के हाथ से छूट गई और वह बेहोश होकर गिर गई । तब और बच्चे सहायता के लिए चीखने-चिल्लाने लगे । उनकी चीख-पुकार सुनकर कई पड़ोसी घटनास्थल पर आ गए । श्रीमती जमुना बाई को सिविल अस्पताल ले जाया गया जहां इलाज के बाद उसे होश आ गया ।

2. द इंडियन मेडिकल एसोसिएशन (झांसी शाखा) ने मास्टर पीयुष के इस कार्य के लिए उसे सम्मानित किया ।

3. मास्टर पीयुष दूबे ने बिजली का करंट लगने के मामले में एक महिला की जान बचाने में साहस और तत्परता का परिचय दिया ।

45. कुमारी संगीता के. के.,
सुपुत्र श्री कुट्टन,
कन्नामाकरा हाउस, कालक्काल डाकखाना,
वाराक्कारा,
त्रिसूर जिला,
केरल ।

कुमारी संगीता के. के. अपनी क्रिसमस की छुट्टियों में राज्य स्कूल खेलकूद आयोजन में भाग लेने के लिए अपनी तैयारी कर रही थी । 21 दिसम्बर, 96 को अपराह्न लगभग 3.00 बजे वह रोजमर्रा की तरह अभ्यास करने के बाद निकटवर्ती कैथाकुलम तालाब में नहाने के लिए गई थी । वहां पहुंचकर उसने दो बच्चियों—9 वर्षीय कुमारी जिशा के. एस. और 7 वर्षीय कुमारी जिनि के. एस. को चार मीटर गहरे तालाब में डूबते हुए देखा । उनको देख रहे अन्य बच्चे सहायता के लिए चिल्ला रहे थे । कुमारी संगीता पानी में कूद पड़ी और दोनों लड़कियों को अपने कंधों पर उठा कर किनारे की ओर वापिस आने लगी । दुर्भाग्यवश कुमारी जिशा उसके कंधे से गिर गई । कुमारी जिनि को सुरक्षित बाहर निकालकर कुमारी संगीता कुमारी जिशा को ढूंढने वापिस गई । उसका पता लगाकर कुमारी संगीता ने उसे भी सुरक्षित बचा लिया । उसके इस कार्य के लिए उसके स्कूल ने कुमारी संगीता का सम्मान किया ।

2. कुमारी संगीता के. के. ने दो बच्चियों को डूबने से बचाने में साहस और तत्परता का परिचय दिया ।

46. कुमारी संगीता,
मार्फत श्री सुदामा सिंह,
ग्राम सुसुवाही, डाकघर सुसुवाही,
जिला वाराणसी,
उत्तर प्रदेश ।

11 दिसम्बर, 1996 को सुबह नवनीत कावर पब्लिक स्कूल, गुवाहाटी के विद्यार्थी सुबह की सभा के लिए स्कूल प्रांगण में एकत्रित थे । अचानक छात्रों ने देखा कि मास्टर पुनीत राय की टांग के चारों ओर एक सांप ने लपेटा मार लिया था । मास्टर पुनीत राय नर्सरी कक्षा का छात्र था । जब दूसरे छात्र चिल्ला रहे थे तब लोअर के. जी. की छात्रा कुमारी संगीता ने सांप को पकड़ा और दूर फेंक दिया ।

2. कुमारी संगीता ने सांप के काटने, जो घातक हो सकता था, से बचाने में साहस और तत्परता का परिचय दिया ।

47. मास्टर शेर सिंह,　　(मरणोपरान्त)
पुत्र श्री लाला राम पटेल,
पटेल निवास, ग्राम सिंहानी,
थाना रानीगंज,
जिला प्रतापगढ़,
उत्तर प्रदेश ।

18 जून, 1996 को पूर्वाह्न लगभग 1.00 बजे डाकुओं का एक दल श्री लाला राम पटेल के घर में घुसा । आवाज सुनकर उनका पुत्र मास्टर शेर सिंह, जो छज्जे में सो रहा था, जाग गया । हथियारबन्द डाकुओं को देखकर मास्टर शेर सिंह ने उन पर पत्थर और ईंटें (छज्जे में रखी) फेंकना शुरू किया । जब इस हमले में कुछ डाकू घायल हो गए तो दूसरों ने आत्म रक्षा में गोलियां चलाईं । परिणामस्वरूप, यह किशोर लड़का गंभीर रूप से घायल हो गया और अस्पताल ले जाते समय रास्ते में ही चल बसा । डाकू घर से कीमती सामान चुराकर भाग गए ।

2. डकैती को विफल करने की चेष्टा में मास्टर शेर सिंह ने साहस और तत्परता का प्रदर्शन किया तथा इस कार्य में अपने जीवन का सर्वोच्च बलिदान किया ।

48. मास्टर सुनील कुमार,
पुत्र श्री सुर्जन सिंह,
ग्राम कसौं डोड,
डाकखाना कसौंडोड,
तहसील नीलोखेड़ी,
जिला करनाल,
हरियाणा ।

19 फरवरी, 1997 को मास्टर सुनील कुमार और विभिन्न विद्यालयों के 37 अन्य छात्र हरियाणा बोर्ड की आठवीं कक्षा की परीक्षा देने के लिए एक कैंटर में निगदू से नीलोखेड़ी जा रहे थे । उनके साथ सात वयस्क भी थे । जैसे ही मिनी ट्रक भाखड़ा नहर की 15 फीट चौड़ी नरवाना उप-नहर पर बने पुल पर चढ़ने वाला था तभी एक मोपेड ने द्रुतगति से सड़क पार की । मोपेड पर बैठे लोगों को बचाने के प्रयास में ट्रक चालक ने ब्रेक लगाए और वह ट्रक को पुल के एकदम बाईं तरफ ले गया । इस प्रक्रिया में ट्रक पुल की कमजोर रेलिंग से जा टकराया जो मुड़ गई । ट्रक कुछ देर रेलिंग से लटकता रहा और आखिरकार नहर में जा गिरा । चूंकि मास्टर सुनील कुमार तैरना जानता था, अतः उसने 15-17 फीट गहरे पानी में से तीन लोगों को बचा लिया । इस दुर्घटना की खबर सुनकर आस-पास रहने वाले ग्रामीण घटनास्थल पर इकट्ठे हो गए और उन्होंने बचाव कार्य में सहायता की । इस दुर्घटना में 17 बच्चे और एक अध्यापक पानी में डूब गए ।

2. मास्टर सुनील कुमार ने तीन लोगों को डूबने से बचाने में साहस और तत्परता का परिचय दिया ।

49. श्री अजय कुमार मिश्र,
नौसेना एयर क्राफ्ट मैकेनिक,
प्रथम श्रेणी, सं. 177817-एफ.,
आई. एन. एस. डेगा/321 फ्लाइट,
मार्फत एफ. एम. ओ. विशाखापटनम,
आंध्र प्रदेश ।

नौसेना एयर क्राफ्ट-मैकेनिक प्रथम श्रेणी श्री अजय कुमार मिश्र सं. 177817-एफ, चेतक और "सीके" रोज एयरक्राफ्ट पर एयरक्राफ्ट मैकेनिक के पद पर कार्यरत हैं । वह 1 जनवरी, 97 से 30 जुलाई, 97 तक के लिए वार्षिक छुट्टी पर थे । 17 से 22 जुलाई, 97 के मध्य ग्राम लामा, जिला सुल्तानपुर को तेज बारिश ने अपनी चपेट में ले लिया था । 22 जुलाई, 97 को सुबह 9.00 बजे सभी घर, जिनमें उनका घर भी था, बाढ़ में डूब गए । इस स्थिति में उसके पड़ोसी श्री के. के. मिश्र का घर ढह गया और उसका विकलांग पुत्र मास्टर घनश्याम मिश्र (12 वर्षीय) उस घर में फंस गया ।

2. अपने खुद के घर के बाढ़ में बर्बाद होने और अपने परिवार के सदस्यों के छत पर खड़े होकर मदद के लिए चिल्लाते रहने के बावजूद श्री ए. के. मिश्र अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा और अपने परिवार की सुरक्षा की परवाह न करते हुए विकलांग बालक को बचाने के लिए भंवर वाले जल में कूदे और अपने पड़ोसी के घर तक तैरकर गए । घर में घुसकर उन्होंने गिरती हुई छत और मलबे से खुद को बचाने के लिए अपने सिर पर कुर्सी रखी । तत्पश्चात वह वहां पहुंचे और असहाय बच्चे को गोद में उठाया तथा उसे लेकर निकटवर्ती सुरक्षित ऊंचे स्थान पर तैरकर गए जो लगभग 70 मीटर दूर था । एक बार खतरे से बाहर आने के बाद उन्होंने उस बच्चे का प्राथमिक उपचार किया जो डूबने ही वाला था और इस प्रकार उसकी जान बचाई ।

3. श्री ए. के. मिश्र, एन. ए. एम.-1 ने प्राकृतिक आपदा की विकट परिस्थितियों में उच्च कोटि के साहस एवं उत्कृष्टतम निःस्वार्थ भावना का परिचय दिया और एक विकलांग बच्चे को डूबने से बचाया ।

एस. के. सराफ
राष्ट्रपति के संयुक्त सचिव

PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi, the 27th March 1998

No. 33-Pres/98.—The Police Medal for Gallantry awarded to Shri Dinesh Kumar, Constable, Delhi Police, Delhi vide President's Secretariat Notification No. 74-Pres/96, dated 20th May, 1996 published in Part-I, Section 1 of the Gazette of India dated Saturday the 15th June, 1996, is hereby cancelled and the medal forfeited under Rule 8 of the Rules governing the award of Police Medal.

S. K. SHERIFF, Jt. Secy.

New Delhi, the 30th March 1998

No. 66-Pres/98.—The President is pleased to approve the award of "Sarvottam Jeevan Raksha Padak" to the undermentioned persons :—

1. Smt. Sampangi Prameela, (Posthumous)
Bodjjanampet Village,
Shadnagar Mandal,
Mahboobnagar District,
Andhra Pradesh.

Smt. Sampangi Prameela was at her parents house in Gochibowli Village for her 3rd delivery. Few months after delivery, on 5-1-1997 around noontime, she alongwith her sister-in-law went to the village tank 'Baarrola Kunta' for washing clothes. Smt. Kareema Begam alongwith her daughter Km. Shahnaz (14 years) and son Master Mohd. Yousuf (9 years) also came to the tank for washing clothes. Meanwhile three more children, namely, Salauddin (12 years) Mohd. Rasak (12 years) and Anwar Pasha (13 years) came to the tank and all of them went into the tank alongwith Master Mohd. Yousuf for swimming. As they did not know swimming, they started drowning into the deep water. On seeing this, Smt. Kareema Begam shouted for help. On hearing her cries, Smt. Prameela who was feeding her six months old child, rushed to the site for help leaving the child aside and succeeded in rescuing one child namely Master Anwar Pasha to safety in her first attempt. She again jumped into the tank to save other children but all of them caught her in panic in such a way that she herself lost control and was drowned. Subsequently, dead bodies of Smt. Prameela and four children were flushed out of the tank.

2. Smt. Sampangi Prameela displayed conspicuous courage and promptitude in saving the life of a child and made the supreme sacrifise in her attempt to save the other four children struggling for their life in the tank.

2. Shri Etwa Oraon @ Etwa Khalkho, (Posthumous)
Vill. & PO. Budda Khukhra,
PS. Mandar,
District Ranchi,
Bihar.

June 26, 1994 was the day of market in Mandar. The entire place was crowded by people returning from the market Suddenly, the water level in the river Koyal rose and started flowing over the bridge with high speed. Shri Etwa Oraon, a peon in the Holy Family Hospital, Mandar helped large number of people in crossing the flooded Koyal River. He saved the lives of seven persons from drowning inthe river. While trying to save the life of the eight person, he himself got carried away by the current of the water nad consequently died. His decomposed body was later on found near village 'Lavazard' on 30-6-1994.

2. Shri Etwa Oraon alias Etwt Khalko showed compassion, courage and promptitude in helping a large number of villagers to cross the flooded river and in saving the life of seven persons from drowning and made the supreme sacrifice while trying to save the life of yet another person.

3. Kumari Saifali Choudhry. (Posthumous)
(Pilot Officer)
Vill. & P.O. Lodhana Gotni,
Teh. Khurja,
Distt. Bulandshahar,
Uttar Pradesh.

On 24 March, 1996 Pilot Officer Shaifali Choudhry, an Air Force Pilot, posted with 115 HU AF at Tezpur (Assam), alongwith three officers of this unit and their families went for a picnic to river Bharali, 25 Kms from the Air Force Station which inridentally is one of the favourite picnic spots with the Air Force Personnel Stationed there. While they were playing at a place where the water is about knee deep, one of the officers suddenly slipped. On watching this, one of the other officer's wife went to his rescue but she too was swept away by the current. The officer standing with Pilot Officer Shaifali Choudhry requested her to move out and rushed to pull out both his wife and his brother officer who were being carried away by the current. Meanwhile Pilot Officer Shaifali Choudhry, without giving a second thought about her own safety, jumped into the water to cover the other flank. The officer after having rescued his wife and the other officer, found that pilot Officer Shaifali Choudhry was drifting down stream. By the time she could be ressued, it was too late and she was declared dead.

2. Pilot Officer Shaifali Choudhry displayed exceptional courage and made the supreme sacrifice of her life in her valiant and selfless effort in trying to save the lives of a brother officer and a women.

4. GS-174077 A Overseer Syed Mohammed Zaki, (Posthumous)
Masjid Darogha Mehboobjan,
District Rampur,
Uttar Pradesh.

GS-1740A Overseer Syed Mohammed Zaki of 405 Road Maintenance Platoon under Project Pushpak was deployed at road Kawlkulh-Mimbung which is under construction in the state of Mizoram. On 10 Sep 96 at about 1100 hrs while he alongwith Supdt B/R Gde II, DM Bhalla was supervising stone collection works at Km 101.50 on the road, he noticed a big boulder coming down from top of the quarry. Fifteen Casual Labourers were working at the site. Apprehending danger to the lives of these 15 casual labourers, Overseer Syed Mohammed Zaki immediately raised an alarm to draw their attention and told them to get out of the way of the falling boulder. Reacting to his warning, all the labourers except two ran towards him. The two labourers who were slightly away could not react to his warning. Realising that there was no other possibility of saving the lives of these two Casual personnel, he rushed towards them and pushed them away from the path of the boulder. In the process, Overseer Syed Mohammed Zaki got hit by the boulder and was dragged down into the valley. He was severely injured in the process. One labour, Mathu Hembram also sustained injuries. Both of them were immediately evacuated and rushed to the Civil Hospital Nagopa. Overseer Syed Mohammed Zaki who was conscious, kept inquiring about the welfare of the labourers on the way to the hospital. He succumbed to the injuries. Even just before his death, he expressed satisfaction that all the labourers were safe.

2. GS-174077A Overseer Syed Mohammed Zaki, thus displayed indomitable courage, valour, high sense of responsibility and supreme devotion to duty and saved the lives of 15 labourers from being hit by the boulder. In the process he made the supreme sacrifice.

S. K. SHERIFF,
Joint Secy.

No. 67-Pres/98.—The President is pleased to approve the award of "Uttam Jeevan Raksha Padak" to the undermentioned persons :—

1. Smt. Sunanda,
W/o Shri Thirthappa,
Mandarthi Village, Udupi Taluk,
Udupi Distt.,
Karnataka.

On 14-2-1997, when all the coolies (labourers) including ladies had gone to the Coffee Estate of Shri Ranganatha for doing work, the thatched sheds made up of arracanut leaves, where they were residing, accidentally caught fire. 22 children of the coolies (labourers) between the age group of 1

to 10 years, left behind in the thatched sheds, were held-up inside the thatched sheds, and started crying.

2. On hearing the cries of children, Smt. Sunanda, who was working at a distance of about hundred yards from the site of the accident rushed to the spot. She courageously entered inside the thatched sheds. She noticed that the fire had spread to the nearby tiled house and two children (Geetha 10 years and Savitha 6 years) had already lost their lives. 22 children were caught inside the burning thatched sheds. She succeeded in bringing the children out of the thatched and tiled line houses and thus saved their lives at grave risk to her own life. Besides the unfortunate death of two children, property of 57 labourers valued at about Rs. 40,000/- was destroyed in the fire.

3. Smt. Sunanda showed courage and promptitude in saving the lives of 22 children in a fire accident without carrying for the risk involved to her own life.

2. Shri R. T. Prabhakar, (Posthumous)
S/o Shri T. Ramappa,
Tumbinakatti Village,
Harihar Taluk,
Chitradurga Distt.,
Karnataka.

On 18-9-1996, at about 5-30 P.M., the students & teachers of the Navodaya School at Uduvalli Village took the Idol of Lord Ganesha for immersion in a nearby tank. The tank is about 1000 metres long and 660 meters wide and the depth of the water level was 10 feet. The Idol was carried by the students upto a distance of about 50 feet in the tank for immersion. Suddenly, 13 students slipped and fell down in the tank. On seeing this, one of the students, Shri R. T. Prabhakar immediately jumped into the tank without caring for the risk involved to his own life and rescued four students one by one by pulling out each one of them and brought them ashore. While in the process of rescuing the 5th student Shri R. T. Prabhaker himself fell down in the tank and died.

2. Shri R. T. Prabhakar showed courage and presence of mind in saving the lives of 4 students and later made the supreme sacrifice of his own life in an attempt to save one more student.

3. Shri Sudaman David, (Posthumous),
Malal Majjakuzhi,
P.O. Thincruz,
Distt. Ernakulam,
Kerala.

On 23-8-95 Shri Sudaman David, a retired Engineer of Rourkela Steel Plant was travelling from Rourkela towards Calcutta in Jharsuguda—Howrah Ispat Express. At about 8.15 P.M., a gang of decoits armed with deadly weapons entered the compartment to commit dacoity. Shri David, unmindful of the risk to his life, fought with the docoits single handed and succeeded in pushing two of them out of the compartment. He was stabbed by one of the dacoits causing his instantaneous death. Subsequently 7 dacoits were apprehended and a case was registered by Kharagpur G.R.P.S. on 24-8-95 under Section 396 IPC and Section 25/27 of the Arms Act. Thus, Shri Sudaman David saved the lives and properties of several other passengers and in the process made the supreme sacrifice.

2 Shri Sudaman David displayed conspicuous courage and promptitude in saving the lives and properties of the passengers from the dacoits and, in the process, unfortunately lost his own life.

4. GS-163069 N Superintendent
B/R Grade II, Udham Singh,
Village Atoos,
P.O. Bichpuri, Distt. Agra,
Uttar Pradesh.

GS-163069N Superintendent B/R Grade II Udham Singh of 359 Road Maintenance Platoon was Incharge of the detachment for snow clearance duty on LEKHARDUNGLA-KHALSAR road which is the highest motoruble road in the world and is located at an altitude ranging between 14800 to 18380 feet. This road is the only life line for Indian troops deployed in Saichen Glacier, Karakoram Pass and Shyok Valley for safeguarding the Borders. On 26 May 96, GS-163069N Supdt. B/R Grade II Udham Singh had worked late till 0130 hrs. for clearing a convoy transporting an Infantry Battlion to Base Camp. The next day weather conditions were extremely bad with subzero temperature and winds blowing at 80 Kms/Hr. Undetered by the adverse weather condition, he started snow clearing operation at 0500 hrs. At 1000 hrs. a huge snow avalanche hurled down near Khardungla Top and carried away a D80-A12 dozer alongwith its oprator GS-165506 OEM P Vijayan and two helpers Kedar Modi and Sree Ram. The dozer and the three individuals were buried under snow 200 feet below in the valley. Despite his being completely exhausted due to long operation Shri Udham Singh rushed to the avalanche site alongwith four subordinates/labours. He motivated them in the rescue operation by setting a personal example of leadership in an extreme dangerous climatic condition without caring for his life. Ignoring the danger of fresh snow avalanches they ran down the valley, dug into the snow, rescued all three persons and immediately organised their evacuation to Leh Hospital. Unfortunately OEM Vijayan, expired on the way. The role of four Subordinates/labourers was supportive only.

2. GS-163069N Superintendent B/R Grade II Udham Singh thus displayed indomitable courage and promptitude in the face of extreme danger and severs adverse weather conditions and saved the lives of 3 persons.

5. Master Vijay Kumar @ Bikau, (Posthumous)
S/o Shri Shukan Mehto,
Village Simrigot,
P.S. Raj Nagar,
Distt. Madhubani,
Bihar.

At around 10-45 a.m. on January 21, 1997 while Mr. Abitabh Shukla was away to work, three armed miscreants entered his Nanakpura residence (in New Delhi) on the pretex of delivering a parcel. As his wife approached to receive the said parcel she was stabbed several times. One of the assailants then attempted to attack their four years old son—Master Mihir. Seeing this, their domestic help, Master Vijay Kumar, rushed forward to intervene. Although Master Vijay was mercilessly stabbed by the intruders and received nine grievous wounds, he did not allow the culprits to even touch Master Mihir. Leaving both Mrs. Shukla and Master Vijay seriously injured, the assailants fled. While Mrs. Shukla dragged himself to the front door in an attempt to get help, Master Vijay ran towards the back with Master Mihir. A little distance away, he collapsed.

2. Both of them were later removed to hospital. While Mrs. Shukla survied, Master Vijay Kumar succumbed to his injuries at Safdarjung Hospital the same evening.

3. Master Vijay Kumar showed conspicuous courage and promptitude in saving the life of a child in an assault case and in the process made the supreme sacrifice.

6. Kum. Pinki, (Posthumous)
D/o Shri Hosiar Singh,
Village Adalpur, P.O. Akoda,
Distt. Mohindergard,
Haryana.

On September 26, 1996, Km. Pinki was returning from school, along with about 40 other children, in the school van. Unnoticed by the passengers, some petrol from a can, kept near the battery, had spilled over on to the battery. Within moments the van caught fire. While six children died on the spot, 13 received severe burn injuries. Km. Pinki managed to save five children by pushing them out of the van. In the process, however, she lost her life.

2. Km. Pinki showed courage and promptitude in saving the lives of five children in a fire accident and in the process made the supreme sacrifice.

S. K. SHERIFF, Jt. Secy.

No. 68-Per/98—The President is pleased to approve the award of "Jeevan Raksha Padak" to the undermentioned persons :—

1. Shri Chalasani Prabhukumar Chowdary,
C/O Chalasani Koteswara Rao,
MIG-92, Auto Nagar,
Visakhapatnam,
Andhra Pradesh.

2. Shri Tankala Suryanarayana,
Chintavaripet, Urlam Post,
Narasannapet Mandal,
Srikakulam District,
Andhra Pradesh.

On 25-08-96 at about 6-10 A. M., due to heavy floods, an Andhra Pradesh State Rodways Transport Corp. Bus fell in a local stream near Vemavaram(V) in Guntur Distt. There were 47 persons in the Bus including 3 crew members. The depth of water in the stream was about 8 feet at the time of incident. The Bus was carried away to a distance of about 3 to 5 feet by the strong current of the water. All the passengers were trapped inside the Bus and faced the risk of drowning to death. On seeing this, Shri Chalasani Prabhukumar Chowdary, driver and Shri Tankala Suryanarayana, cleaner of an oil tanker parked nearby, jumped into the stream, swam to the place at the risk of their own life and engaged themselves in the rescue operation. They broke open the windows of the bus and pulled out 25 trapped passengers from the ill-fated bus. 13 persons could not be saved and lost their lives.

2. S/Shri Chalasani Prabhukumar Chowdary and Tankala Suryanarayana displayed courage and promptitude in saving the lives of 25 passengers from drowning in the stream.

3. Shri Setty Solman,
S/O Subba Rao,
Dokiparru Village,
Medikondur Mandal,
Guntur District,
Andhra Pradesh.

On 25-08-96 at about 6-10 A. M., due to heavy floods, an Andhra Pradesh State Roadways Transport Corp. Bus fell in a local stream near Vemavaram(V) in Guntur Distt. There were 47 persons in the Bus including 3 crew members. The depth of water in the stream was about 8 feet at the time of the incident. The bus was carried away to a distance of about 3 to 5 feet by the strong current of the water. All the passengers were trapped inside the Bus and faced the risk of drowning to death. On seeing this, Shri Setty Solmon who saw rope from the lorry, swam to the place and engaged himself in the rescue operation at the risk to his own life. One end of the rope was tied to the bus and the other end to the lorry. With the help of the rope, he succeeded in rescuing four children and five women to safety out of the total 34 persons who were rescued. The remaining 13 persons unfortunately lost their lives.

2. Shri Setty Solmon displayed courage and promptitude in saving the lives of 9 passengers from drowning in the stream.

4. Shri Ajit Kumar Jha,
Vill. Budhnagra Radho,
P. O. Mushhari,
Distt. Muzzafarpur,
Bihar.

On 3-1-1994 at 6-30 a. m., a boat carrying 12 persons capsized in Buddi Gandak river near village Budhnagra Radho in the Mushhari Block of Distt. Muzafarpur. All the persons on board fell into the river. On seeing this, Shri Ajit Kumar Jha, who was sailing in his personal boat jumped into the river and rescued three persons, namely, Amrit Ram, Hafeez Mian and Bindu Kumari to safety at the risk of his own life. The remaining nine persons could not be saved and were drowned to death.

2. Shri Ajit Kumar Jha showed courage and promptitude in saving the lives of three persons from drowning unmindful of the grave risk involved to his own life.

5. Shri Arvind Bedi,
Village Buhali Kothi,
P. O. Paprola, Teh. Baijnath,
Distt. Kangra,
Himachal Pradesh.

On 8-9-1997, Shri Kartik, retailer of readymade garments, aged about 24 years, resident of Madhya Pradesh, staying at Paprola for 10 years, went to wash clothes in a back water (Khudd) (12-13 feet deep) at Buheli Kothi. He slipped into the back water due to sudden rise in its water level and was carried away by the current of the water. Consequent upon alarm raised by the students of an adjacent school, one Shri Arvind Bedi, practising at Sports Hostel, Paprola started running towards the incident site. On seeing the man drowning, he jumped into the river without caring for the risk to his own life. He caught Kartik at some distance and took him out in an unconscious state and admitted him in the Government hospital immediately for treatment and thus saved his life.

2. Shri Arvind Bedi showed presence of mind and courage in saving the life of Shri Kartik from drowning, despite risk to his own life.

6. Shri Girdhari Lal,
Village-Paniehar,
Tehsil-Jaisinighpur,
Distt. Kangra,
Himachal Pradesh.

7. Shri Kalvan Singh,
Village-Paniehar,
Tehsil-Jaisinghpur,
Distt. Kangra,
Himachal Pradesh.

8. Shri Praveen Singh,
Village-Paniehar,
Tehsil-Jaisinghpur,
Distt. Kangra,
Himachal Pradesh.

On the dav of Mahashivratri on 7-3-1997, 20-25 persons including ladies and children were going to Kuniashwar Mandir on a boat. Unfortunately the boat capsized in the middle of the river where the depth of water was about 30 feet. On hearing the alarm raised by them, Shri Praveen Singh, Shri Kalvan Singh and Shri Girdhari Lal who were taking bath in the river, reached the site immediately. They jumped into the river without caring for the risk involved to their lives and saved the lives of 20-25 persons including 5-6 children, aged 7 to 12 years.

2. S/Shri Girdhari Lal, Kalyan Singh and Praveen Singh's presence of mind and courageous act saved the lives of 20-25 persons from drowning.

9. Shri Inder Singh Dhatwalia,
S/O Shri Kanshi Ram,
Village-Kallar,
P.O. Bhadoli Kalan, Gumarvi Tehsil,
Distt. Bilaspur,
Himachal Pradesh.

On 24-4-1997, Master Anil Kumar, who had come alongwith his parents from Nava Shahar, Punjab for a visit, fell into a pit (known as Saryali pit) and started drowning. On hearing the screams of some persons, Shri Inder Singh, a teacher at Government Middle School Gharan, who was returning from school at 2-30 P.M., jumped into the pit from a height of 15-20 feet without caring for the risk involved to his own life and brought the drowning child out of the pit in an unconcious state and took him to the hospital. The width of the pit is 58 feet and the water was about 13 feet at the time of the incident. The incident occurred near a bridge where the flow of water was very fast.

2. Shri Inder Singh's presence of mind and courageous act saved the life of a child from drowning despite risk to Shri Inder Singh's own life.

10. Shri Mehar Chand Thakur,
Village & P.O. Vashisht Kothi,
Jagat Sukh, District Kullu,
Himachal Pradesh.

On 5-9-1995, some Army personnel and their family members were trapped inside the SASE Complex which was completely surrounded by water due to flood in the Bease River. It was not possible for the Army personnel and their family members to come out of the Complex as all exit points were blocked by the flood water. On being informed by some youths of village that some army personnel have been trapped in the SASE Complex Shri Mehar Chand Thakur, resident of nearby Vashisht Village, who is trained in rescue operations, collected the rescue material and rushed to the site. On seeing the trapped persons shouting for help from the four storied building, he threw rope and asked them to bind it with a nearby tree and thereafter brought them to the edge of the river one by one single handedly.

2. Shri Mehar Chand Thakur showed courage and promptitude in saving the lives of about 150 Army personnel and their family members from drowning, unmindful of the grave risk involved to his own life.

11. Shri N. L. Angadi,
S/O Shri Lokaji Angadi (Teacher),
Hittanalli,
Tanda, Taluk Sindgi,
Distt. Bijapur,
Karnataka.

On 19-7-1996 at about 10-00 a.m., Km. Fatima (9 years) while drawing water from a well, situated by the side of the road near her house in Hamal Colony, accidentally fell into the well. The well, which did not have adequate fencing guard, is 15 feet in width and 15 feet in depth. The water level was about 10 feet at the time of the incident. On hearing her cries, Shri N. L. Angadi, Headmaster of Jagadamba Kannada Boys Higher Primary School, who was on his way to the School, rushed to the place, jumped into the well and rescued the girl to safety. Shri Angadi, who had recently undergone an operation for appendicities, performed the life saving act without hesitation despite his health condition.

2. Shri N. L. Angadi displayed courage and promptitude in saving the life of a girl unmindful of the risk to his own life.

12. Master Nagappa,
S/O. Nanjundappa,
R/O D. N. Doddi, Lakkur Hobli,
Malur Taluk, Kolar District,
Karnataka.

On 20-12-1996 one Smt. Guramma, 26 years, of Kolar District, while fetching water from the nearby well slipped and fell into the well. When she was about to drown in the well, a boy, Nagappa S/O Nanjundappa aged 12 years, who saw the incident, jumped into the well to save her. The length of the well is 44 feet, width 26 feet and depth 15 feet containing 13 feet of water at the time of the incident. There is no supporting wall to the said well. Nagappa succeeded in bringing Smt. Guramma out of the well by swimming and catching hold of her hair. Further, he immediately informed her husband who in turn took her to the hospital for treatment.

2. Master Nagappa showed courage and promptitude in saving the life of Smt. Guramma at the risk to his own life.

13. Shri Arun Thomas,
H. N. III/J-3, Govind Nagar,
Carrasco Vaddo,
Tiuim Industrial Estate P. O.,
Mapuza, Bardez,
Goa.

On 4-5-1997 at about 1-30 P. M., Shri Arun Thomas accompanied by his parents/relatives & others was returning in a private boat "Dhanalekshmi" after attending the ceremony of receiving First Holy Commune held at the St. Michaels Church at Veliyanad. When the boat reached near the Mozhuschery Jetty, Master Adarsh (4 years) fell accidentally into the river. The unfortunate incident stunned all persons on board. Nobody could gather courage to save the hapless child. On seeing this, Shri Arun Thomas jumped into the turbulent river and succeeded in rescuing the child to safety after much struggle in the water and with the help of others in the boat.

2. Shri Arun Thomas displayed courage and promptitude in saving the life of a child unmindful of the risk involved to his own life.

14. Shri Edison Varghese,
Kureethara House,
Putincunnu P. O.,
Alappuzha Distt.,
Kerala.

On 28-5-1997, an 18 year old boy, namely, Praveen employed in a Hotel, while taking bath in the shallow part of the Thodupuzha river at Mariyil Kadavu in Idukki District, slipped into deep water. The boy was carried away by the strong current of the water and he started drowning. On that day the river was swelling with water flowing from Moolamattom Power House. A large number of people witnessed the incident but nobody could dare to jump into the turbulent water to save the life of the hapless boy. On seeing this, Shri Edison who was bathing on the other side, swam across the river, caught the drowning boy firmly and swam to the bank of the river.

Shri Edison displayed courage and promptitude in saving the life of a boy unmindful of the grave risk to his own life.

15. Shri G. Jayachandran Pillai,
Puthuval Puthen Veedu,
Choondakkunnu, Madhavapuram,
Titanium P. O.,
Thiruvanathapuram,
Kerala.

On 3-11-1996 at about 3-30 p. m., five tourists including a couple from South Africa and a family of three including a child from Bangalore were enjoying boating at Veli Tourist Lake, Thiruvananthapuram. Accidentally, the boat turned up-side down in the mid way and the tourists fell down in the lake. They shouted for help. On hearing their cries, people gathered on the bank of the lake, but nobody came forward to rescue them. On seeing this, Shri Jayachandran Pillai, who was standing on the other side of the lake about 75 metres from the site of the accident, rushed for help and rescued all the 5 persons one by one with the help of the boat driver. In this brave act, he had to swim a distance of about 100 metres for rescuing each person. He brought them to the shore by holding each person by hair one by one.

2. Shri G. Jayachandran Pillai displayed courage and promptitude in saving the lives of 5 persons from drowning in the Veli Lake unmindful of the grave risk to his own life.

16. Shri M. D. Sasidharan,
Madappallil House, Madamon,
Vadasserikara,
Pathanamthitta District,
Kerala.

Every year in the Sabarimala season, a large number of Sabarimala pilgrims through to 'Kadavu', a portion of Pamba river enroute to Sabarimala to take bath. This portion of the river has a depth of 20 feet and a width of about 50 meters. The water flows through the side of a cutting which has a height of 70 feet to the main Mandarakulanji-Sabarimala road. The current of water at this particular point is very high. On 16-12-94, at the middle of Sabarimala season, Shri M. D. Sasidharan, a ferryman of Public Works Department at Madamon Vallakkadavu, rescued 2 Sabarimala pilgrims belonging to different states, who accidentally fell into the river Pamba at Madaman Kadavu. He had also shown similar courage in the past and saved the lives of 3 persons on 30-11-91, one person on 3-12-91, one person on 15-12-92 and 3 persons on 14-12-93.

2. Shri M. D. Sasidharan showed courage and promptitude in saving the lives of two persons from drowning in the Pamba river.

17. Shri N. Chandran,
S/O Shri Prabhathy,
Madathil House, Thevarkulam,
P.O. Koduvayur, Palakad,
Kerala.

On 31-3-1996 at about 5-00 P. M., Chandran went to Thevarkulam tank for taking bath. On reaching the bund, he youngman struggling for life in the tank. The level of the water in the tank was about 4 metres at the time of the incident. On seeing this, Shri Chandran, who is physically handicapped, jumped into the tank and rescued the young man to safety without caring for the risk involved to his own life.

2. Shri N. Chandran, despite being physically handicapped, displayed courage and promptitude in saving the life of a person from drowning in the tank unmindful of the risk involved to his own life.

18. Shri Nazeer,
S/O Abu,
Kollamparambil House,
Azhicode Jetty, Azhikode Village,
Kodungallur Taluk,
Thrissur District,
Kerala.

On 24-6-1996, a country boat, on which five fishermen were proceeding for fishing at deep sea, capsized in the sea, about 8 kms. away from the sea-shore at Azhikode of Kodungallur Taluk, Thrissur District of Kerala. When the information of the accident reached the sea shore, Shri Nazeer rushed to the spot, ventured into the sea and helped to save the lives of four fishermen who were struggling for life in the sea. The fifth fishermen, Shri saidu had unfortunately died by that time.

2. Shri Nazeer's brave, heroic and timely action saved the lives of four persons, despite risk to his own life.

19. Ms. P. Susheela,
D/O P. Janaky Amma,
Pallat House, Thiruvambady,
Thrissur District,
Kerala.

On 28-9-1996 at about 5-30 p. m. Ms. P. Susheela was going to the Market for shopping. On the way she had to cross the double line railway track which runs in the direction of North to South. When she reached at the crossing, one train was going towards south on the first track. When the train passed she saw three persons (ie. Smt. Lakshmi Ammal, the Grandmother and her daughter-in-law with her child age 4 years) going towards the northern side along the track. The grandmother had been left behind. At that time the Island Express train to Bangalore was approaching towards North, from behind them. When the grandmother heard the sound of the train, she just could not move. On hearing her cry for help, the daughter-in-law turned back and rushed towards the mother-in-law to save her from danger, but in vain. The mother-in-law was run over. In the process, the daughter-in-law had left the child behind her. On seeing the child on the railway track, in which the train was approaching fast, Ms. Susheela ran and jumped on the track courageously and pulled out the child in front of the train at grave risk to her own life. While the mother-in-law died, the daughter-in-law suffered injuries and hospitalised.

2. Ms. P. Susheela displayed courage and promptitude in saving the life of a 4 year old child from being crushed under the train, unmindful of the grave risk to her own life.

20. Shri Puthalath Veerankutty,
Puthalath House,
Poolacode Village, Kozhikode Taluk,
Kozhikode District,
Kerala.

On 12-1-97, two children and their step mother, while taking bath in the Eravazhinhipuzha, (Chathamangalam Panchayat, Kozhikode District, Kerala State) were swept away by strong currents of water. Alerted by the cries of the persons present at the site Shri Veerankutty, a country firsherman, who happened to be nearby, plunged into the river and saved them from drowing. According to the State Government, Shri Veerankutty was instrumental in saving the lives of six other persons from drowing in the river on various occasions in the past also.

2. Shri Puthalath Veerankutty displayed courage and promptitude in saving the lives of three persons from drowing in the river unmindful of the risk to his own life.

21. Shri C. H. Laxmana,
S/o Sundara Parappady Chenakkode,
Madhur Village, P. O. Hidayath Nagar,
Kasaragod District,
Kerala.

On 28-9-96 at about 10.30 AM, Smt. Sheelavathi with her two daughters aged 15 years and 9 years had gone to a tank at Mathur Village of Kasaragod District for washing clothes and taking bath. The depth of water in the tank was about 12 to 15 feet. While the mother was washing clothes, the younger daughter accidentally fell into the tank. The elder daughter tried to pull her out by extending her hand but she also fell into the tank. On seeing this, the mother rushed to save her children but she also fell into the tank. On hearing their cries for help, Shri C. H. Laxmana rushed to the spot and, without caring for the risk to his own life, jumped into the tank, pulled out all the three one by one and brought them to the shore safely.

2. The timely and courageous act of Shri C. H. Laxmana saved the lives of three persons.

22. Constable Abdul Rehman,
C/o Superintendent of Police,
Drug,
Madhya Pradesh.

On 20-12-95 at about 9.30 P.M., fire broke out at Hatri Bazar, Drug (M.P.) which gutted a Bidi /Tobacco Shop of Shri Ashok Jain and a cloth shop of Shri Manmal Jain. On receipt of information in the Police Station Drug, a team headed by Inspector S.K.A. Naqui rushed to the site. On coming to know that Shri Manmal Jain was trapped inside his burning shop, Constable Abdul Rehman, a member of the Police team, entered the shop without caring for the risk involved to his own life and rescued Shri Jain.

2. Constable Abdul Rehman showed initiative promptitude and courage in saving the life of a person, unmindful of the risk involved to his own life.

23. Constable Jagdish Singh,
Constable No. 140,
P. S. Barela,
District Jabalpur,
Madhya Pradesh.

On 4-2-1996 at about 7.00 A.M., while on his way to serve summons on some persons, constable Jagdish Singh heard some women raising alarm near a well. He rushed to the place and found that a 14 year old girl had fallen into the well. The well, about 100 feet in depth, was full of water. The hapless girl was crying desperately for help but nobody from the large crowd that had gathered there could gather courage to rescue her as the attempt was fraught with danger to rescuer's life. On seeing this, constable Jagdish Singh, without caring for the risk involved to his own life, jumped into the well in full uniform. The drowning girl clung to him tightly. He succeeded in rescuing the girl to safety after about 30 minutes' hard struggle. The girl sustained only minor injuries. His brave act was applauded by the Press, Nagar Panchayat and the public.

2. Constable Jagdish Singh showed exemplary initiative, promptitude and courage in saving the life of a 14 years old girl from drowning in a well.

24. Master Meghraj Thapa, (Posthumous)
7th Mills Upper Shillong,
Eastern Air Command Hqtrs.,
East Khasi Hills District,
Meghalaya.

On 12th May, 1997 at about 8.30 A.M., Master Meghraj Thapa (15 years), student of Class-VII of Gorkha High School, Upper Shillong, went to play near Elephant Falls at Upper Shillong alongwith 6 other friends. At about 11 A.M., one of the students, namely, Master Kishan Singh (11 years) while trying to pluck flowers from the edge of the stream, slipped and fell into the deep and swift swirling pool of the stream and started drowning. The depth of the stream at the place was about 15–20 fee. On seeing this and knowing that Master Kishan Singh did not know how to swim, Master Meghraj Thapa jumped into the stream and managed to push Master Kishan Singh to safety. In the process, on of his legs got stuck in between the stones inside the swirling stream. He could not save himself and was drowned. By the time he was pulled out of the water it was already too late and he had lost his life.

2. Master Meghraj Thapa displayed conspicuous courage, valour and presence of mind in saving the life of his friend under the circumstances of grave danger to his own life and in the process sacrificed his own life.

25. Pu. H. Hranglina,
Head Teacher, Lungtian,
Chhimtuipui District,
Mizoram.

On 18-3-1996, the villagers of Lungtian decided to burn and clear the nearby lands/jungle for Jhum Cultivation. The Villagers detailed for this task, grouped themselves in 3 batches and proceeded separately towards their respective positions, unaware of the position/locations of the other batches. The first batch, without waiting for the arrival of the third batch, set the Jhum on fire. As a result, Pu Ngunhmunga, an old man of 58 years, was trapped in the rapidly spreading fire. Since he was completely encircled by the fire, there was no way he could possibly escape from the blazing fire. The panic stricken and totally immobilized Pu Ngunhmunga was left at the mercy of the blazing fire. At this juncture, Pu H. Hranglina, without caring for the risk and dangers involved to his own life, entered the fire and rescued Pu Ngunhmunga to safety while other three members of the group could not gather courage to provide any assistance and were merely onlookers.

2. Pu H. Hranglina had also performed a similar heroic feat on 19-5-1994 wherein he had saved the life of Pu L. Pianga from drowning in the Kolodyne River when the latter accidentally fell into the river and was carried away by the strong current of the river.

3. Pu. H. Hranglina showed courage and promititude in saving the life of an old man unmindful of the grave risk to his own life.

26. Pu. T. Duailova.
Tlangnuam Vengthar,
Aizawl,
Mizoram.

On the night of 23-7-1997, heavy thunderstorm and torrential rain had occurred in the Aizawl District of Mizoram State. At about 11.40 p.m. on that night, Shri T. Duailova, Taxi driver, while returning home after dropping his passengers, heard a helpless scream of a lady coming from the side of road (National Highway 54) at Tuikhurhlu sub-village. Due to total darkness and failure of electricity, he could not see anything. However, he got down from his taxi and proceeded through a muddy passage in the direction from where the screams were coming. His limbs were sinking in the mud. He realised that a house on the hill side was washed away by a landslide. In spite of suffering several bruises and injuries, he proceeded towards the screaming voice of the lady coming from below the sliding mud.

2. Without caring for his own safety, he rescued the lady and carried her on his shoulder through the sliding mud feeling his way through the darkness and storm to a safe place on the road as the lady could not move by herself due to dislocation and fractures in her pelvic joint. The victim was hospitalised on the following day.

3. The landslide was so severe and devastating that it carried the debris of the house and household materials to almost 1. km. away and the lady to about 100 feet away from the site where the house was originally located. The owner of the house died in the landslide and his dead body was found 1 km. away from the original location of the house.

4. Shri T. Duailova showed courage and promptitude in saving the life of a lady under very adverse conditions unmindful of the risk involved to his own life.

27. Shri Bichitra Mallik,
Vill - Badhuwasuni
PS - Raj Kanika
Distt. Kendrapara.
Orissa.

On 4-6-97, at about 11 A.M., one Shri Harihar Mallik, aged about 38 ayears, entered his old & unused well for its renovation. The well is about 20 feet deep and the depth of water in the well was 6 feet at the time of incident. When Harihar Mallik entered the well, there was emission of poisonous gas due to which he could not come out and drowned in the well. On seeing this, Shri Hemanta Mallik, cousin brother of Harihar Mallik, entered into the well to rescue Shri Harihar Mallik. But he also could not come out of the well due to influence of the poisonous gas. Thereafter, Shri Nirakar Mallik, younger brother of Harihar Mallik, tried to rescue the above named two persons but failed in his attempt and was also trapped inside the well. In order to rescue the above named three persons, Shri Mahanta @ Alekha Prasad Mallik, elder brother of Harihar Mallik, entered into the well but he also came under the influence of the poisonous gas and failed to come out of the well.

2. At this crucial juncture, Shri Bichitra Mallik, an outsider and a rickshaw puller, who was one of the persons gathered outside the well, entered into the well without caring for the risk involved to his own life and rescued two persons, namely, Shri Mahanta @ Alekha Prasad Mallik and Shri Nirakar Mallik who were by then unconscious, with the help of a rope. They were rushed to the hospital for treatment and saved. Shri Harihar Mallik, who was subsequently taken out by fire brigade, which reached the site of incident afterwards, died in the hospital.

3. Shri Bichitra Mallik showed courage and promptitude in saving the lives of two persons. at grave risk to his own life.

28. Smt. Anita Yadav, (Posthumous)
W/o Shri Kripa Dayal Yadav,
Councillor Khedli Mandi,
District Alwar,
Rajasthan.

29. Shri Gopal Nepali, (Posthumous)
Mohalla Kajodika,
Khedli Ganj, Khedli,
District Alwar,
Rajasthan.

On the night of 16-17 December, 1996 some dacoits armed with deadly weapons entered the house of Shri Santosh Jai Bhagwan. On hearing the shouts of the watchman (chowkidar) and also the bullet shots, Shri Kripa Dayal Yadav and his wife Smt. Anita Yadav rushed to their neigbour's help and tried apprehend the dacoits. At this juncture, one of the dacoits shot at Smt. Anita Yadav. Smt. Yadav died on the spot. Shri Gopal Nepali, the servant of Shri Santosh Jai Bhagwan also grappled with the armed dacoits and fought bravely with a wooden stick unmindful of grave risk to his own life. In the scuffle he was also shot dead by the dacoits. On being informed about the incident, the police subsequently arrested eight dacoits involved in the incident.

2. Smt. Anita Yadav and Shri Gopal Nepali displayed courage and promptitude in attempting to save the life and property of Shri Santosh Jai Bhagwan and made the supreme sacrifice in the process.

30. Shri Aziz-Ur-Rehman,
Madar Colony,
Near Masid
Banswara,
Rajasthan.

31. Shri Hari Ram Yadav,
Workshop, Rajasthan State
Roadways Transport Corporation,
Banswara,
Rajasthan.

Shri Aziz-Ur-Rehman, Conductor and Shri Hari Ram Yadav, Driver were on duty on the Rajasthan State Roadways Transport Corporation's Bus (Registration No. RJ 14P-541 of Banswara Depot). The Bus started from Jaipur at 8.30 pm on 2-9-1996 for Banswara. When the Bus reached Pratapgarh on 3-9-1996 at 7.30 am, a number of persons including four dacoits in the guise of passengers boarded the Bus. When the Bus was passing through the Jungle about 4 km from Pratapgarh, the personnel of Narcotic Deptt. stopped the Bus for checking. They checked the baggage of the passengers. They found an unlicenced loaded revolver, four cartridges, one Rampuri knife and one Nylon rope in the luggage of the dacoits. Shri Aziz-Ur-Rehman, the conductor of the Bus, also saw these articles in the possession of these four persons. The Narcotics Department Staff also advised the driver and conductor of the bus to hand over the four persons to the police authorities, since, according to the State Government, the matter did not fall within the jurisdiction of the Narcotics Department. When the Narcotic Deptt. Staff left and the Bus started for its onward journey, the conductor displayed presence of mind and did not touch these persons immediately. When the Bus reached Suhagpura, Shri Rehman asked the Driver to stop the Bus at the Police Station. S/Shri Rehman and Yadav then assisted the police in apprehending two dacoits. One dacoit fled in the mix up. The Bus left for Banswara. The fourth dacoit who had hidden himself in the Bus was also nabbed and handed over to Police at Banswara. As such Shri Aziz-Ur-Rehman and Hari Ram Yadav helped the police in apprehending the dacoits and saved the lives and property of the passengers on board.

2. S/Shri Aziz-Ur-Rehman and Hari Ram Yadav displayed presence of mind, courage and promptitude in saving lives and property of the passengers and helped the police in apprehending the dacoits.

32. Shri Dhanna Ram,
S/o Shri Keraram Meena,
P. O. Keerva, Tehsil Pali,
Rajasthan.

33. Shri Mohan Lal,
S/o Shri Magaram Meena,
Village & P. O. Keerva,
Tehsil. Pali,
Rajasthan.

On 26-5-96 at about 9.00 A.M., 35 years old Smt. Aanchi, W/o Shri Kanaram alongwith her four children, namely, Master Jitaram (10 years), Master Devaram (6 years), Km. Rekha (3 years) and Master Narayan (2 years) jumped into an old well near the Cooperative Store of Village Keerva. The well which is 16 feet in Length, 9 feet in width and 70 feet in depth had water upto the level of 45 feet. On seeing this Ms. Nazu who was washing clothes at the well, raised alarm for help. Responding to the call Shri Dhanna Ram who lives in an adjoining house and was taking his meals at that time rushed to the place and jumped into the well. One Shri Mohan Lal who happened to be there with Shri Dhanna Ram also followed him and jumped into the well after Shri Dhanna Ram. Together, they managed to pull out Smt. Aanchi, Km. Rekha and Master Narayan in fully conscious state by tying them with the Pagris (Head dress) thrown in by the people who had assembled there. Master Devaram and Master Jitaram were also pulled out in an unconscious state by tying them with a cot with the help of pagris. Master Devaram and Master Jitaram, however, died on their way to hospital.

2. S/Shri Dhanna Ram and Mohan Lal showed courage and promptitude in saving the lives of three persons from drowning in the well.

34. Shri Dharam Singh Balmiki,
Department of Culture,
Govt. of Sikkim,
Tashiling Secretariat,
Gangtok.

On the night of 8th June, 1997, Gangtok town and its surrounding areas were rocked with a very serious unprecedented natural calamity in the form of a massive land-slide. There was total disruption of civic amenities, many houses collapsed and many persons lost their lives. Mr. Dharam Singh Balmiki, who was returning from the market, noticed that the road was sinking as a result of heavy overflow of water through the drains by the side of the road in Development Area, Gangtok. A number of houses were situated there including that of the District Collector (South).

2. Shri Balmiki, sensing imminent danger, rushed to the house of the District Collector (South) and informed his family members of the impending calamity. He also informed others, who were residing near the District Collector's house. Based on his information, all these people, numbering fifteen, immediately left their housse and minutes after their departure, a massive land-slide washed away the houses of these people. The effect of land-slide was so grievous that it took the lives of sixteen people who were buried alive underneath.

3. The presence of mind and courageous act of Shri Balmiki, even at personal risk to his own life, saved the lives of fifteen persons.

35. Shri Rajendra Singh Khedar,
Ins Rajput,
C/o FMO Vishakhapatnam,
ANDHRA PRADESH.

On 14-3-1996, at about 1930 hours, Mr. Demadu, worker at Naval Dockyard, who was driving his moped erratically, drove over the jetty and fell into the wet basin off N-22. Mr. Demadu, who did not know how to swim, started drowning and shouted for help. On seeing this, Shri Rajendra Singh Khedar, SEA 1 (SD) No. 175312N, who was proceeding ashore on short leave, rushed to the site and threw himself into the water to rescue Mr. Demadu. On reching him, Shri Rajendra Singh Khedar put the lifebuoy around the waist of Mr. Demadu who by then was semi-conscious and in a state of shock. Shri Rajendra Singh Khedar swam a diistance of about 50 feet and brought out Mr. Demadu to jetty ladder and to safety with great difficulty as it was a dark night of ebb tide. Thereafter, he provided first aid to Mr. Demadu by pumping out water from his stomach and took other measures to restore his normal breathing.

2. Shri Rajendra Singh Khedar showed courage and promptitude in saving the life of a person in utter disregard to the risk involved to his own life.

36. GS-172077 N Superintendent,
B/R Grade II Ram Naresh,
397-RMP, 70 RCC (GREF),
HQ. 38 BRTF, Project Deepak.

GS-172077N Superintendent B/R Grade II Ram Naresh of 397 Road Maintenance Platoon was detailed as Supervisor Incharge for launching of Bailey Bridge and sausage wall abutments at Darcha on Manali-Sarchu Road. The river was in full fury with water currents rushing at speeds of 10 to 12 knots. Due to paucity of bridging equipment a 130 feet TS Bailey Bridge was planned instead of 160 feet which would have been easier to construct. Consequently, the abutments were to be constructed inside the flowing river.

2. On 10-7-96 at about 1645 hours during the construction of an abutment, a labour, namely, Shri Raju Rai fell into the deepest point of the river accidentally. On seeing this, all personnel raised alarm and ran downstream. Shri Ram Naresh Superintendent B/R Gde II without hesitation and disregarding the risk to his own life, jumped into the river and saved Shri Raju Rai from drowning.

3. GS-172077N Superintendent B/R Grade II Ram Naresh, thus displayed courage and presence of mind and saved the life of a labour disregarding risk to his own safety.

37. Master Brajabasimayum Rajiv Sharma,
Kwakeithel Leimakhujam Leikai,
Imphal,
Manipur.

Master B. Rajiv Sharma had gone to spend his holidays at his friend Master Bhagyaban's house. At around midnight on December 21, 1996 Master Rajiv was suddenly awakened by smoke in the room. Opening his eyes, he saw the door of the room (which connected with the kitchen) burning. Sensing the danger, he tore through the flames to rush to the first floor where Master Bhagyaban's 19 year old brother Shri Manglemjao (a spastic) was asleep. As Master Manglemjao refused to leave the bed, Master Rajiv tied him up with a 'dhoti', tying its other end to a wooden post. Since the wooden staircase was already burnt, Master Rajiv pushed Shri Manglemjao to the ground floor and then jumped onto a mound of sand below. Exhausted with the effort, he fainted. He was subsequently given medical treatment for burn and other injuries.

2. Master B. Rajiv Sharma showed courage and promptitude in saving the life of a handicapped boy in a fire incident.

38. Km. Pragati Seth.
13, DDA Flats (RPS),
Mansarovar Park, Shahdara,
Delhi

The incident occurred on the afternoon of February 7, 1997. Responding to a knock at the door Km. Pragati went to answer it. Seeing her cousin, Shri Sagar standing outside the wire mesh door, she opened it. As soon as the door was opened, Sagar and two/three of his accomplices stormed into the third storey flat and pulling Km. Pragati into the kitchen slashed her throat with a dagger. They then ransacked the house for cash and valuables, leaving Km. Pragati bleeding profusely on the kitchen floor. Concerned about her five year old brother Master Gaurav, who was sleeping in one of the rooms being ransacked, Km. Pragati dragged herself and tried to bolt the room which the culprits had entered. Her effort was, however, in vain as she collapsed in a semi-conscious state. This attracted the attention of the miscreants who slashed her throat again, twisted her arms and delivered blows on her head. After ransacking the flat thoroughly the intruders left. With considerable effort, Km. Pragati dragged herself outside on the terrace gesticulating frantically to a neighbour—Mr. Rajesh Gupta. Realizing that she needed help, Mr. Gupta rushed to her aid and took her to the hospital.

2. Km. Pragati regained consciousness after 24 hours. Her windpipe had been slashed and her left hand is still non-functional.

3. Km. Pragati Seth showed courage and promptitude in bravely facing the robbers.

39. Master Amit Kumar,
Najarpur, P. O. Jamkunda,
Tehsil-Junnardev,
District Chhindwara,
Madhya Pradesh.

On May 8, 1997, Master Rambharos and Master Babloo (both aged 5 years) were playing near a well which was under construction in village Najarpur when they accidentally fell into it. The width of the well was 12 feet and depth was around 14 feet. The level of water in the well at the time of the incident was about 4-5 feet. Master Amit Kr. (aged 15 years), who was passing by, heard some noise coming from the direction of the well. When he looked into the well, he saw Master Babloo struggling in the water. Even though he did not know how to swim, Master Amit jumped inside, picked up Master Babloo and brought him out of the well. Master Amit then revived him by giving first aid. As soon as the child became conscious, he told Master Amit about Master Rambharos. Master Amit jumped into the well a second time. Locating Master Rambharos at the bottom of the well, Master Amit brought him out too. Unfortunately it was too late. Master Rambharos had breathed his last by that time.

2. Master Amit Kumar showed courage and promptitude in saving the life of a child from drowning.

40. Km. Amrita Minhas,
123, Basant Enclave,
Palam Marg,
New Delhi.

The incident occurred on the afternoon of October 27, 1996. Mr. Minhas family had returned home after having lunch outside. As his daughter, Km. Amrita, entered her room she saw a stranger (a young boy of around 14 years) inside. As soon as he saw her, he jumped out of the window. He had apparently, removed the central bar of the window grill to enter the room. Without wasting any time, Km. Amrita ran out and grabbed him just as he was trying to jump over the fence. In a desperate attempt to free himself from Km. Amrita's grip, the intruder dug his teeth in her arm twice. Km. Amrita, however, did not let him go. Thereafter, with the help of the neighbours, the burglar was handed over to the police.

2. It was later discovered that the thief had been involved in another burglary case in the same colony.

3. Km. Amrita Minhas showed courage and promptitude in getting the burglar arrested.

41. Master Harsh Aggarwal,
941, Kucha Patiram,
Sita Ram Bazar,
Delhi.

At about 7.20 a.m. on November 26, 1996, Master Harsh Aggarwal and his younger sister were on their way to school when a blue line bus jumped the red light and rammed into their school van. As a result, 18 students including the driver of the van sustained serious injuries. In fact one of the students later succumbed to his injuries.

2. Master Harsh too suffered two major fractures in his right leg and was bleeding profusely. Dragging his right leg and crawling from one child to another, he managed to pull out three other students, including his sister, from the mangled remains of the van. Meanwhile, a crowd had gathered at the site and some onlookers helped them to get on to a cycle rickshaw. The victims were then taken to the nearby hospital.

3. Master Harsh Aggarwal showed courage and promptitude in saving the lives of three students in an accident.

42. Master K. Raju,
S/o Shri K. Venkataiah,
Student of Sri Raghavendra Convent,
Rajoli Village, Weddepally (N),
Andhra Pradesh.

On December 1, 1995, 11 people (including Master K. Raju) were going in a country boat from Rajoli Village to Sri Raghavendra Swamy Temple for a wedding. Their boat had travelled about two kilometres in the Tungrbhadra river, when the driver detected a leakage. As he jumped off the boat into the water with the intention of dragging it to the river bank, the passengers thought he was abandoning the boat. All of them rushed to catch hold of him. As they gathered on one side of the boat, it capsized. Master K. Raju carried a one year old baby on his shoulders, from amongst the passengers, in an effort to save him. Noticing a suitcase floating in the water, he grabbed it for support. Just then another boat with three teenaged boys on it, came to their rescue. While six of the 11 persons were drowned in the accident, five survived.

2. Master K. Raju showed courage and promptitude in saving the life of a baby from drowning.

43. Master Nandan Kumar Jha,
C/o Shri Prakash Mahata,
I Type, 5/4 Adityapur,
Jamshedpur,
Bihar.

The incident occurred while Master Nandan Kumar Jha was visiting his relatives in Patna. At around 2.00 p.m. on April 30, 1997 one of the huts in Buddha Colony suddenly caught fire. Master Nandan Kumar Jha, who was present there, saw this. Realizing the potential danger, he tore through the flames, untied the helpless animals trapped

inside the hut and saved the life of a child and some female members. Thereafter, he attempted to douse the flames by throwing water from a bucket. Seeing this, other people from the colony too rushed to the spot and the fire was subsequently brought under control. Master Nandan Kumar received several burn injuries in the incident.

2. Master Nandan Kumar Jha showed courage and promptitude in saving the lives of some women and a child in a fire incident.

44. Master Peeyush Dubey,
S/o Dr. Ashok Kumar Dubey,
Civil Doctors Colony,
CMO Banglow Campus, Civil Lines,
Elite Gwalior Road,
Jhansi,
Uttar Pradesh.

In the evening of June 12, 1996 Master Peeyush Dubey, his younger brother Himanshu and their friends were playing cricket near their house. During the course of the play, Master Peeyush saw a middle-aged woman standing near an electric pole. Noticing the electric wire in her hand and hearing the strange sounds she was making, Master Peeyush went near the pole. Realizing that the woman (later identified as Smt. Jamuna Bai) was caught in the grip of an electric current, Master Peeyush immediately snatched his brother's cricket bat and with its help tried to pull away the woman's hand from the wire. When he did not succeed, he started hitting her wrist with the bat. As a result of the repeated blows, the wire slipped from Smt. Jamuna Bai's hand and she fell down unconscious. Meanwhile, the other children had shouted for help. Hearing their cries, several neighbours rushed to the spot. Smt. Jamuna Bai was taken to the Civil Hospital where she recovered after receiving medical treatment.

2. The Indian Medical Association (Jhansi Branch) honoured Master Peeyush for his act.

3. Master Peeyush Dubey showed courage and promptitude in saving the life of a woman in an electrocution case.

45. Km. Sangeetha K. K.,
D/o Shri Kuttan,
Kunnamakara House, Kalakkallu P. O.
Varakkara,
Thrissur District,
Kerala.

Km. Sangeetha K. K. was preparing to participate in the State School Athletic meet during her Christmas holidays. On December 21, 1996 at about 3 p.m. she had gone to bath in the neighbouring Kaithakulam pond after her daily practice. On reaching there, she saw two children—nine year old Km. Jisha K. S. and seven year old Km. Jini K. S. drowning in the four metre deep pond. Other children watching them were shouting for help. Km. Sangeetha jumped into the water and carrying the two girls on her shoulder started returning to the bank. Unfortunately, Km. Jisha slipped away. After bringing Km. Jini out safely, Km. Sangeetha went back in search of Km. Jisha. Locating her, Km. Sangeetha managed to save her too. Km. Sangeetha was honoured by her school for her deed.

2. Km. Sangeetha K. K. showed courage and promptitude in saving the lives of two children from drowning.

46. Km. Sangita,
C/o Shri Sudama Singh,
V. Susuwahi, P.O. Susuwahi,
Varanasi,
Uttar Pradesh.

On the morning of the 11th December, 1996 the students of Navneeta Kanwar Public School, Susuwahi, had gathered in the school compound for morning assembly. All of a sudden, the students noticed a snake coiled around Master Puneet Rai's leg. Master Puneet Rai was a student of Nursery Class. While the other students screamed, Km. Sangita, a student of Lower K. G., caught hold of the snake and threw it away.

2. Km. Sangita showed courage and promptitude in averting the snake bite which could have been fatal.

47. Master Sher Singh, (Posthumous)
S/o Shri Lala Ram Patel,
Patel Niwas, Village Singahi,
Police Station Raniganj,
Distt. Pratapgarh,
Uttar Pradesh.

At around 1.00 a.m. on June 18, 1996, a group of dacoits entered Shri Lala Ram Patel's house. Hearing the noise, his son, Master Sher Singh, who sleeping on the terrace, woke up. Seeing the armed gangsters, Master Sher Singh started hurling stones and bricks (kept on the terrace) at them. As some of the dacoits were injured in the attack, the others opened fire in self-defence. As a result, the young boy was seriously wounded and died on the way to hospital. The dacoits escaped with valuables from the house.

2. Master Sher Singh showed courage and promptitude in trying to foil the dacoity and in the process made the supreme sacrifice.

48. Master Sunil Kumar,
S/o Shri Surjan Singh,
Village Karsa Dod,
P.O. Karsa Dod,
Tehsil—Nilokheri,
District Karnal,
Haryana.

On February 19, 1997, Master Sunil Kumar and 37 other students from different schools, were going from Nighdu to Nilokheri in a canter to appear in the Class VIII examination of the Haryana Board. They were accompanied by seven adults. Just as the mini truck was about to get on to the bridge on the 15 feet wide Narwana branch of the Bhakra Canal, a moped sped across the road. In an effort to save the moped-riders, the truck driver applied the brakes and maneuvered the vehicle to the extreme left of the bridge. In the process he hit the weak railing of the bridge which gave way. The truck dangled for a while and finally plunged into the canal. As Master Sunil Kumar knew swimming, he managed to save three persons from the 15—17 feet deep water. On hearing of the mishap, villagers living in the vicinity gathered at the spot and assisted in the rescue operations. As many as 17 children and a teacher were drowned in the accident.

2. Master Sunil Kumar showed courage and promptitude in saving the lives of three persons from drowning.

49. Shri Ajay Kumar Mishra,
Naval Aircraft Mechanic,
1st Class, No. 177817-F,
INS DEGA/321 FLIGHT,
C/o FMO Visakhapatnam,
Andhra Pradesh.

Naval Aircraft Mechanic, 1st Class, Shri Ajay Kumar Mishra No. 177817-F, working as Aircraft Mechanic on Chetak and MATCH role aircraft, was on annual leave from 01 July 1997 to 30 July 1997. Torrential rains struck village Lama, District Sultanpur, between 17 to 22 July 1997. On 22 July 1997 at 9 a.m. all the houses including his own house got submerged in the floods. At this juncture, his neighbour Shri Krishna Kumar Mishra's house collapsed and his handicapped son, Master Ghan Shyam Mishra (aged 12 years) trapped inside the house.

2. Despite having lost his house in the floods and his family members standing on top of the roof crying for help, Shri A. K. Mishra, disregarding personal safety and the security of the family, went ahead to save the handicapped boy by jumping into the swirling waters and swimming to his neighbour's house. On entering the house he put a chair on his head to save himself from the falling roof and debris. Thereafter, he approached and picked up the helpless boy into his arms and swam with him to the nearest safe high ground which was appox. 70 mts. away. Once clear of danger, he rendered effective first aid to the boy who had been on the verge of drowning and thus saved his life.

3. Shri A. K. Mishra, NAM, displayed a very high degree of courage and showed utmost selflessness in hazardous conditions of natural calamity and saved the life of a handicapped boy from drowning.

S. K. SHERIFF
Joint Secy. to the President

प्रबन्धक, भारत सरकार मुद्रणालय, फरीदाबाद द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशन नियंत्रक, दिल्ली द्वारा प्रकाशित, 1998
Printed by the Manager, Govt. of India Press, Faridabad and Published by the Controller of Publications, Delhi, 1998